



कार्य की योजना बनाएं और फिर उसके अनुरूप कार्य करें

बरसात में शहरों का हाल

यह राहत की बात है कि देर से आए मानसून ने पूरे देश को कवर कर लिया। बीते कुछ दिनों में मानसून देश के उन हिस्सों में भी पहुंच गया, जहां उसके पहुंचने को लेकर आशंका उत्पन्न हो गई थी, लेकिन इसी के साथ देश के अनेक शहरों से ऐसी खबरें आना चिंताजनक भी है कि पहले ही बारिश में ही जल भराव, ट्रैफिक जाम आदि के कारण लोग त्रस्त हुए। यह समझ आता है कि किसी शहर में कम समय में अधिक बरसात हो जाने से लोगों को जल भराव जनित कुछ समस्याओं का सामना करना हो पड़ेगा, लेकिन आखिर इसका क्या मतलब कि कई शहरों में मामूली बरसात ही लोगों के लिए समस्या बन जाए? यह निराशाजनक है कि हर वर्ष बरसात में हमारे छोटे-बड़े शहर तमाम समस्याओं से घिर जाते हैं। गलियों से लेकर प्रमुख मार्गों तक में पानी जमा हो जाने के कारण केवल आवागमन ही बुरी तरह बाधित नहीं होता, बल्कि कई छोटी-बड़ी दुर्घटनाएं भी देखने को मिलती हैं। कई बार इन दुर्घटनाओं में लोगों की जान भी जाती है। इससे बड़ी विडंबना और कोई नहीं हो सकती कि जिस बारिश की प्रतीक्षा हो रही होती है, वह मुसीबत का जरिया बन जाती है। इसका मुख्य कारण शहरों का नियोजित ढंग से विकास न करना और विशेष रूप से वर्षा जल निकासी के उचित प्रबंध न होना है।

प्रति वर्ष मानसून के आगमन के पहले ऐसी खबरें आती हैं कि स्थानीय निकाय जल भराव से बचने के उपाय करने के साथ नालों का सफाई करने में जुट गए हैं, लेकिन आम तौर पर पहली बारिश ही इन दावों की पोल खोल देती है। यह पोल इसलिए खुलती है, क्योंकि नगर निकाय अपना काम सही तरह नहीं करते। इसके बाद भी वर्षाजनित समस्याओं के लिए नगर निकायों के अधिकारी, पाषंड, मेयर आदि कभी जवाबदेह नहीं ठहराए जाते। जवाबदेही के इस अभाव ने ही हमारे शहरों की सूरत बिगाड़ रखी है। बारिश में शहर और भी अधिक दुर्दशाग्रस्त हो जाते हैं। कहीं सड़कें जलमग्न हो जाती हैं तो कहीं सीवर उफना जाते हैं। बारिश में कई समस्याएं इसलिए भी सिर उठा लेती हैं, क्योंकि जड़कों और नालियों का निर्माण घटिया तरीके से होता है। इसके चलते कई बार सड़कें और यहां तक कि एक्सप्रेसवे तक धंस जाते हैं। जिन शहरों में बारिश से अत्यधिक जल भराव होता है, उन्हें सैकड़ों करोड़ रुपये का आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है, लेकिन वर्षाजनित समस्याओं के स्थायी और ठोस समाधान तब भी नहीं किए जाते। इसका एक बड़ा कारण नगर निकायों का भ्रष्टाचार है। अपने देश की एक बड़ी त्रासदी यह भी है कि सीवेज के साथ ड्रेनेज सिस्टम दोयम दर्जे का है। स्थिति यह है कि शहरों के विस्तार के क्रम में नए विकसित इलाकों में भी जलनिकासी के उचित उपाय नहीं किए जाते। इससे यही लगता है देश में सुनियोजित नगर नियोजन नाम की कोई चीज ही नहीं रह गई है।

भरोसे की पूंजी

किसी भी राज्य की आर्थिक सुदृढ़ता का वास्तविक पैमाना केवल निवेश के एमओयू नहीं, बल्कि धरातल पर वैश्विक कंपनियों का बढ़ता भरोसा है। गुरुग्राम में स्वीडन की दिग्गज कंपनी आइक्रिया का 3,500 से 4,000 करोड़ रुपये का आगामी निवेश इसी साख को बचा करता है। 10 हजार प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रोजगार सृजित करने वाली यह परियोजना हरियाणा के लिए महज औद्योगिक विस्तार नहीं, वैश्विक मानचित्र पर अपनी स्थिति को और मजबूत करने का एक स्वर्णिम अवसर है। हरियाणा लंबे समय से देश का औद्योगिक इंजन रहा है, लेकिन आज की प्रतिस्पर्धी वैश्विक अर्थव्यवस्था में सिर्फ भौगोलिक स्थिति का लाभ उठाना काफी नहीं है। पूंजी हमेशा वहीं रुख करती है, जहां नीतिगत स्थिरता, प्रशासनिक पारदर्शिता और त्वरित निर्णय प्रक्रिया की गारंटी हो। आइक्रिया का यह कदम दिखाता है कि हरियाणा ने इन मोर्चों पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी विश्वसनीयता साबित की है, जो तीव्र अंतर-राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के इस दौर में बेहद अहम है। सरकार को अब यह सुनिश्चित करना होगा कि लालाप्रीताषाही और अनावश्यक प्रक्रियागत अड़चनों को दूर रखकर परियोजना को समयबद्ध तरीके से पूरा किया जाए।

आइक्रिया का हजारों करोड़ रुपये का निवेश हरियाणा की निवेश-अनुकूल नीतियों पर वैश्विक मुहर है

विकास के लिए विदेशी ऋण की आवश्यकता

गंगा पाण्डेय

आरबीआई के अनुसार मार्च 2026 तक भारत का कुल विदेशी ऋण 762.8 अरब डालर तक पहुंच गया है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 26.3 अरब डालर अधिक है। यह आंकड़ा देश की आर्थिक दिशा और भविष्य की जिम्मेदारियों का संकेत है। विदेशी ऋण वह धन है, जिसे सरकार, कंपनियां या वित्तीय संस्थाएं सरकार से उधार लेती हैं। यह ऋण अंतरराष्ट्रीय बैंकों, बहुपक्षीय संस्थाओं, विदेशी सरकारों या वैश्विक पूंजी बाजारों से प्राप्त किया जाता है। इसका उपयोग बढ़े-बढ़े बुनियादी ढांचे, उद्योगों, ऊर्जा परियोजनाओं, परिवहन, स्वास्थ्य और अन्य विकास कार्यों में किया जाता है। विकासशील देशों के लिए विदेशी पूंजी कई बार आवश्यकता बन जाती है। जब घरेलू बचत और निवेश विकास की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाते, तब बाहरी संसाधनों का सहारा लिया जाता है। भारत भी इसी श्रेणी में आता है। विशाल आबादी, तेजी से बढ़ते शहर, आधुनिक परिवहन नेटवर्क, ऊर्जा की

जब घरेलू बचत विकास की जरूरतों को पूरा नहीं कर पाते, तब बाहरी संसाधनों का सहारा लेना जरूरी हो जाता है

बढ़ती मांग और औद्योगिक विस्तार के लिए भारी निवेश की जरूरत पड़ती है। ऐसे में विदेशी ऋण विकास की गति को बनाए रखने का एक माध्यम बनता है, लेकिन किसी भी ऋण की एक कीमत होती है। केवल मूलधन लौटाना ही पर्याप्त नहीं होता, बल्कि उस पर ब्याज भी चुकाना पड़ता है। भारत की स्थिति उन देशों जैसी नहीं है, जो विदेशी ऋण के कारण आर्थिक संकट में फंस गए। भारत के पास पर्याप्त विदेशी मुद्रा भंडार है और उसकी अर्थव्यवस्था का आकार भी लगातार बढ़ रहा है। यही कारण है कि विदेशी ऋण को नियंत्रित और प्रबंधनीय मानते हैं। फिर भी यह तथ्य नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि ऋण में लगातार वृद्धि भविष्य के लिए सतर्क रहने का

संकेत देती है। विदेशी ऋण लेना कोई असामान्य या गलत नीति नहीं है। समस्या तब पैदा होती है, जब ऋण की गति आर्थिक उत्पादकता से अधिक तेज हो जाए। यदि ऋण बढ़ता रहे, लेकिन उसके अनुरूप उत्पादन, निर्यात और रोजगार न बढ़ें तो आर्थिक असंतुलन पैदा होने लगता है। विकास के दावों का मूल्यांकन केवल जीडीपी की ऊंची विकास दर या निवेश के बड़े आंकड़ों से न किया जाए। यह भी देखा जाए कि उस विकास की नींव कितनी मजबूत है। विदेशी ऋण का निवेश उत्पादक क्षेत्रों में हो, निर्यात क्षमता बढ़े, रोजगार सृजित हो और राष्ट्रीय आय में स्थायी वृद्धि हो तो यही ऋण विकास का इंजन बन सकता है, लेकिन यदि ऋण की विस्तार आय और उत्पादकता से अधिक तेज गति से होता रहा तो इसका बोझ आने वाली पीढ़ियों के कंधों पर जाएगा। इसलिए भारत की आर्थिक सफलता का वास्तविक पैमाना यह भी होना चाहिए कि विकास कितान टिकाऊ, आत्मनिर्भर और ऋण पर कम निर्भर है। (लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)



प्रो. निरंजन कुमार

आतंकियों का गुणगान करने वाली पुस्तकों के लेखक-प्रकाशकों को ब्लैकलिस्ट करना ही काफी नहीं। उनके खिलाफ राष्ट्र-विरोधी लेखन के लिए मामले दर्ज किए जाने चाहिए

कुख्यात कम्युनिस्ट तानाशाह जोसेफ स्टालिन ने एक साक्षात्कार में कहा था कि शिक्षा एक ऐसा हथियार है, जिसका असर इस पर निर्भर करता है कि इसे कौन थामे हुए है और इसका निशान किस पर है? स्टालिन के ही बैचारिक पूर्वज व्लादिमीर लेनिन कहते थे 'मुझे बच्चों को सिखाने के लिए चार साल दीजिए और मैंने जो बीज बोया है, वह कभी उखाड़ा नहीं जा सकेगा।' ऐसे कथन जिस खतरनाक चीज की ओर इशारा करते हैं, उसका दंश अपना देश सैकड़ों वर्षों से झेल रहा है। शिक्षा के जरिये ऐसा नैरेटिव बनाया गया जो देश-समाज को विध्वंस के रास्ते पर ले जाता रहा। ऐसी भयानक साजिश का ताजा उदाहरण है जम्मू-कश्मीर में चर्चनित पुस्तकों में ऐसी सामग्री का समावेश, जो युवाओं को गुमराह कर अलगाववाद की ओर धकेलने, आतंकवाद को बढ़ावा देने, सामाजिक अशांति फैलाने तथा भारत की संप्रभुता- अखंडता को खतरे में डालने वाला है।

यह मामला केंद्र सरकार द्वारा प्रायोजित 'समग्र शिक्षा योजना' के तहत सरकारी स्कूलों के पुस्तकालयों के लिए चयनित पुस्तकों से जुड़ा है, जिसकी सामग्री अलगाववाद, आतंकवाद और भारत विरोधी सोच को बढ़ावा देने वाली

है। विवाद के केंद्र में 'पर्सनैलिटीज एंड लीजेंड्स आफ जेएंडके' और 'ग्रेट पर्सनैलिटीज आफ जम्मू एंड कश्मीर' नाम की दो पुस्तकें हैं। ओबेराय बुक्स सर्विस द्वारा प्रकाशित इन पुस्तकों में आतंकी मकबूल भट्ट, अलगाववादी सैयद अली शाह गिलानी, शबौर अहमद शाह, मसरत आलम, मोरवाइज उमर फारूक और मौलवी फारूक जैसे देश विरोधी तत्वों को जम्मू-कश्मीर के महापुरुषों के रूप में चित्रित किया गया है। जबकि भारत को खतरनाक तरीके से नकरात्मक रूप में चित्रित किया गया है। कुख्यात आतंकवादी मकबूल भट्ट को जहां 'महान क्रांतिकारी' बताया गया, वहीं जम्मू-कश्मीर पर भारत की संप्रभुता को चुनौती देने और उसके पाकिस्तान में विलय की पैरवी करने वालों का महिमामंडन किया गया है। यहां तक कि हाफिज सईद जैसे दुर्दंत अंतरराष्ट्रीय आतंकी को भी प्रशंसा मिली है। यहां तक कि भारत को 'एक कब्जा जमाने वाला एवं दमनकारी राज्य' कहा गया है। जबकि वास्तविकता एकदम उलट है कि पाकिस्तान ने ही जम्मू-कश्मीर के एक हिस्से पर न केवल अवैध कब्जा किया हुआ है, बल्कि इस गुलाम जम्मू-कश्मीर के लोगों का ऐसा दमन जारी रखा हुआ है कि वहां के लोग सहायता के लिए भारत की ओर निहार रहे हैं।

विश्व फुटबाल में फिसड़्डी क्यों हैं हम

भारत 140 करोड़ से अधिक की आबादी वाला देश है, लेकिन जब कभी वैश्विक स्तर पर फुटबाल की बात होती है तो भारत का नाम न देखकर पीड़ा होती है। इस मामले में न केवल पूरे देश को, बरन केंद्र और राज्य सरकारों को भी आत्ममंथन करना चाहिए कि आखिर हमारे खिलाड़ी और टीम फुटबाल में वैश्विक स्तर पर क्यों नहीं पहुंच पाए? हमारा देश अभी उस लायक क्यों नहीं बना कि फुटबाल की वैश्विक प्रतियोगिता में हिस्सा ले सके? यह देख कर हैरत होती है कि पराग्वे, कुराकाओ और केप वर्दे जैसे कई छोटे-छोटे देश भी फीफा विश्व कप में खेल रहे हैं। पराग्वे की आबादी 70 लाख के आसपास है, केप वर्दे की साढ़े पांच लाख, जबकि कुराकाओ की आबादी डेढ़ लाख है। मतलब भारत जैसे देश के नगर या उपनगर जैसी आबादी वाले देश भी फीफा विश्व कप का हिस्सा हैं। वहीं, हम फुटबाल विश्व कप आयोजन के महज दर्शक बने हुए हैं?

समय आ गया है कि अब हमें फुटबाल के भी वैश्विक स्तर के खिलाड़ी तैयार करने पर गंभीरता से ध्यान केंद्रित करना चाहिए। इस महादेश में से हम भी डिग्रेयो माराडोना, पेले आदि की तरह आगे बढ़ रहे लियोने मेसी, रोनाल्डो, हार्लैंड, नेमार, एमबापे जैसे खिलाड़ी विकसित कर सकेंगे, लेकिन इसके लिए गांव-गांव और स्कूल-स्कूल सर्वे करना होगा और प्रतिभाशाली खिलाड़ी खोजने होंगे। उन्हें हर तरह की सुविधाएं मुहैया करानी होंगी, तब कहीं जाकर हम अच्छे फुटबाल खिलाड़ी तैयार कर सकेंगे। दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में शुमार भारत फुटबाल में फिसड़्डी क्यों है, जबकि इस देश में फुटबाल को लेकर जुनून कम नहीं है। बंगाल में मोहन बागान और ईस्ट बंगाल जैसे क्लब वर्षों से फुटबाल का आयोजन कर रहे हैं। बंगाल में फुटबाल का क्रेज ऐसा है कि वहां फुटबाल को लेकर उपन्यास लिखे गए। मोती नंदा जैसे बड़े लेखक ने फुटबाल केंद्रित उपन्यास 'स्ट्राइकर' और 'स्ट्रापर' लिखे हैं। आज क्रिकेट के महासागर में गोते लगाने वाले इस देश में फुटबाल का समृद्ध



क्रिकेट की तरह फुटबाल को भी मिले प्रोत्साहन। फाइल

इतिहास रहा है, लेकिन जून 2026 की ताजा फीफा रैंकिंग में भारतीय पुरुष फुटबाल टीम विश्व में 138वें स्थान पर है। यह दर्शाता है कि वैश्विक स्तर पर टिकने के लिए हमें अभी एक लंबी और कठिन यात्रा तय करनी है। भारतीय टीम एशियाई फुटबाल परिसंघ की रैंकिंग में 26वें स्थान के आसपास संघर्ष कर रही है। यह स्थिति इसलिए भी चिंताजनक है कि यदि हम थोड़ा और नीचे खिसके तो विश्व कप 2030 के क्वालीफायर में सीधे प्रवेश के बजाय कठिन नाकाउट दौर से गुजरना पड़ सकता है। ऐसा नहीं है कि अपने देश में अंतरराष्ट्रीय स्तर के फुटबाल खिलाड़ी नहीं रहे हैं। सुनील छेत्री, बाइचुंग भुटिया, चुन्नी गोस्वामी, आइएम विजयन, पीके बेनर्जी, गुप्तीत सिंह संधू जैसे खिलाड़ियों का नाम हम सब जानते हैं। सुनील छेत्री भारत के अब तक के सबसे सफल और महान फुटबालर हैं। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय फुटबाल में सर्वाधिक गोल किए हैं और सबसे ज्यादा मैच खेले हैं। उन्हें

कैप्टन कैप्टारिक के नाम से भी जाना जाता है। बाइचुंग भुटिया सिक्किमी स्नाइपर के नाम से मशहूर हैं। चुन्नी गोस्वामी ने 1962 के एशियाई खेलों में भारत को स्वर्ण पदक दिलाया था। ऐसे विश्वस्तरीय खिलाड़ियों को तैयार करने के लिए हमें गंभीर प्रयास करने होंगे। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड की तरह फुटबाल की संस्था बनानी चाहिए। फिर यह देश में फुटबाल खिलाड़ी खोजने की मुहिम चलाए और जो प्रतिभाशाली खिलाड़ी नजर आए उन्हें आगे बढ़ाए। उसके प्रशिक्षण पर रकम खर्च करे, पर यह भी ध्यान रखना होगा कि वह बोर्ड भ्रष्टाचार की भेंट न चढ़ जाए। फुटबाल जोखिम भरा खेल है। समृद्ध घर के नौजवान इस खेल में ज्यादा नहीं आते हैं, इसलिए खिलाड़ियों को खोजने गांव-गांव जाना होगा। जैसे इस देश में क्रिकेट को लेकर आइपीएल हो रहा है, उसी तर्ज पर फुटबाल को लेकर भी खेल प्रतियोगिताएं होनी चाहिए।

भारत के बड़े-बड़े उद्योगपतियों पर दबाव बनाना चाहिए कि वे क्रिकेट के साथ ही फुटबाल को भी प्रमोट करें। अगर ईमानदारी और समर्पण के साथ एक लक्ष्य लेकर हम चलें तो आने वाले समय में देश से भी महान फुटबालर पैदा हो सकते हैं। हम विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिभाओं खोजने के लिए प्रतियोगिताएं आयोजित करते हैं। फुटबाल के क्षेत्र में भी प्रतिभाओं खोजने के लिए खुलवात स्कूलों से करनी चाहिए। खेल का एक पीरियड निर्धारित करके फुटबाल में रुचि रखने वाले खिलाड़ियों का चयन करना चाहिए। इस नब्बे मिनट के खेल के लिए शरीर में ऊर्जा और चपलता की आवश्यकता होती है, इस दृष्टि से बच्चों का चयन करना चाहिए। निश्चित रूप से ऐसे अनेक बच्चों सामने आएंगे, जो फुटबाल के लिए ही बने होंगे। ऐसे बच्चों का चयन करके उन्हें फुटबाल खिलाड़ी के रूप में विकसित किया जाना चाहिए। सरकार को इन पर खर्च करना चाहिए। फुटबाल फुटबाल, बल्कि हाकी आदि अन्य खेलों के लिए भी हमें इसी सोच के साथ आगे बढ़ना चाहिए। (लेखक ग्रामीण विकास मंत्रालय के सदस्य हैं) response@jagran.com



अवधेश राजपूत

यह अच्छा है कि विवाद सामने आते ही जम्मू-कश्मीर सरकार ने तत्काल प्रभाव से दोनों पुस्तकों को वापस लेने का आदेश दे दिया है। आठ अधिकारियों का निर्लेबन और दोनों पुस्तकों के लेखकों व प्रकाशकों को ब्लैकलिस्ट कर दिया गया है। मामले की जांच के लिए एक उच्चस्तरीय जांच शुरू की गई है, लेकिन घटनाक्रम ने कई सवाल भी खड़े कर दिए हैं। एक तो यही कि विशेषज्ञों की समिति के कौन से सदस्य हैं, जिन्होंने ऐसी पुस्तकों की खरीद के लिए सिफारिश की? यह भी कि पुस्तकों की स्वीकृति के लिए विशेषज्ञों की समिति का गठन किसने और किस आधार पर किया? इन सबके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए। याद रहे कि ये पुस्तकें, स्कूल के पुस्तकालयों तक दुर्घटनावाश या किसी गलत खरीद के कारण नहीं पहुंची थीं। इसे एक आधिकारिक प्रक्रिया के माध्यम से विशेषज्ञ समिति की सुनियोजित सिफारिश पर खरीद गया। क्या यह कि चिंतनीय नहीं कि भारत सरकार की ही एक शिक्षा योजना का जम्मू-कश्मीर

सरकार के निर्देश पर ऐसी किताबों पढ़ाने के लिए उपयोग किया जा रहा है, जो एक तरफ आतंकवादी और अलगाववादियों का महिमामंडन करती है तो दूसरी तरफ भारतीय राजसत्ता को नकारात्मक रूप से चित्रित करते हुए हमारी संप्रभुता और अखंडता को खतरे में डालने का काम करती है। इस मामले में पुस्तक के लेखकों और प्रकाशकों को ब्लैकलिस्ट कर देना ही काफी नहीं है। उनके खिलाफ राष्ट्र-विरोधी लेखन प्रचारित करने के लिए मामले दर्ज किए जाने चाहिए, जो खुले तौर पर आतंकवाद और अलगाववाद का महिमामंडन करते हैं। यह भारत की संप्रभुता और अखंडता के लिए खतरा है। भारतीय कानूनी व्यवस्था में राष्ट्रीय सुरक्षा, संप्रभुता, अखंडता, देशद्रोह, अलगाववाद और आतंकवाद से जुड़े विषयों के लिए संविधान के विशुद्ध अनुच्छेद और दंडात्मक कानून प्रविधान हैं। पुस्तक की सामग्री अनुच्छेद 19 (2) का स्पष्ट उल्लंघन है। इसके अतिरिक्त भारतीय न्याय संहिता 2023 की धारा 152 और 197 के साथ-साथ गैरकानूनी



ऊर्जा

संवर्ष से सिद्धि

तपस्या केवल उपवास, ध्यान या कठोर साधना का नाम नहीं है, बल्कि किसी उच्च उद्देश्य की प्राप्ति के लिए धैर्य, संयम, पुरुषार्थ और कष्ट-सहिष्णुता के साथ निरंतर प्रयास करने का नाम है। जीवन में जो भी व्यक्ति किसी क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करता है, उसके पीछे वर्षों का अनुशासित परिश्रम और तपः छिपा होता है।

प्रकृति भी हमें संदेश देती है कि निखरने के लिए तपन आवश्यक है। स्वर्ण अग्नि में तपकर कुंदन बनता है, हीरा घिसाई के बाद चमकता है और बीज धरती का अधकार चौरकर वृक्ष का रूप लेता है। इसी प्रकार मनुष्य का व्यक्तित्व भी विपरीत परिस्थितियों, कठिन परिश्रम और आत्मसंयम की अग्नि में तपकर तेजस्वी बनता है। जो व्यक्ति चुनौतियों से घबराकर पीछे हट जाता है, वह अपनी संभावनाओं को खो देता है। जबकि साहसी व्यक्ति हर कठिनाई को सफलता की सीढ़ी बना लेता है। तपस्या आत्मशुद्धि और लोककल्याण का सर्वोच्च सत्य के प्रमाण हैं कि महान उपलब्धियां केवल दृढ़ संकल्प और तप के बल पर ही प्राप्त होती हैं। तप का अर्थ स्वयं को कष्ट देना नहीं, बल्कि अपने स्वार्थ, आलस्य और दुर्बलताओं पर विजय प्राप्त करना है। अपने लक्ष्य के प्रति समर्पण, समय का सदुपयोग, संयमित जीवन, सतत अध्ययन, सेवा और सत्य के लिए संघर्ष, यही आधुनिक तप हैं। जब मनुष्य अपने व्यक्तित्व सुखों से ऊपर उठकर समाज और मानवता के हित में कार्य करता है, तब उसका जीवन सार्थक बनता है। तपस्या का वास्तविक फल केवल सफलता नहीं, बल्कि आत्ममग्न, चरित्र, विवेक और आंतरिक तेज की प्राप्ति है। यही तेज उसे जीवन की सर्वोच्च उपलब्धियों तक पहुंचाता है।

मुकेश ऋषि

करे, लेकिन ऐच्छिक रूप से केवल अवकाश के दिनों में और इसके लिए उनकी प्रतिकर अवकाश या अतिरिक्त परिश्रमिक देने की व्यवस्था भी करे। विद्यालय कार्य दिवसों में सरकारी शिक्षकों को किसी भी स्थिति में शिक्षण कार्य से विरत न किया जाए। शिक्षक किसी भी राष्ट्र के रौढ़ होते हैं। देश के भविष्य बच्चों को एक सजग, ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ नागरिक के रूप में तैयार करने की जिम्मेदारी शिक्षकों पर होती है। सरकारों को शिक्षकों की सुविधाओं पर ध्यान देना चाहिए। सरकारें नियमित शिक्षक हो नियुक्त कर सकें। अस्थायी शिक्षक की परंपरा रोक दी जानी चाहिए। जब शिक्षक अपने भविष्य और रोजगार के प्रति निश्चित होंगे तभी वह भयमुक्त हो शिक्षण का कार्य कर सकेंगे। उच्च वेतन भोगी सरकारी शिक्षकों की भी समर्पण भाव के साथ अपने शैक्षणिक दायित्वों का निर्वाह करना चाहिए। इससे सरकारी स्कूलों के प्रति समाज का आकर्षक बढ़ेगा। डा. बीपी पाण्डेय, अलीगढ़ (उप्र)

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें:

दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,

डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा

ई-मेल: response@jagran.com

एक नजर में

एडीबी ने भी भारत की वृद्धि दर का अनुमान घटाया

नई दिल्ली: एशियाई विकास बैंक (एडीबी) ने पश्चिम एशिया संकट के कारण ऊर्जा कीमतों में सभावित बढ़ोतरी के मद्देनजर चालू वित्त वर्ष 2026-27 के लिए भारत की सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) वृद्धि दर का अनुमान बुधसप्तिवार को 6.9 प्रतिशत से घटाकर 6.6 प्रतिशत कर दिया। वृद्धि दर में इस कमी के बावजूद भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्था बना हुआ है। इससे पहले आइएमएफ ने भारत की अर्थव्यवस्था के 2026-27 में 6.4 प्रतिशत की दर से बढ़ने का अनुमान लगाया है। (।प्र.)

'फुटवियर' क्षेत्र के अनिवार्य गुणवत्ता मानकों में संशोधन

नई दिल्ली: सरकार ने गुरुवार को फुटवियर यानी जुता-चप्पल क्षेत्र से जुड़े दो गुणवत्ता नियंत्रण आदेशों (वयूसीओ) में संशोधन करते हुए पुराने स्टॉक की निकासी की समयसीमा एक वर्ष बढ़ाकर 31 जुलाई, 2027 कर दी। साथ ही अनुसंधान एवं विकास (आरएंडडी) के लिए नमूनों के आयात को भी छूट दी गई है। चमड़ा और फुटवियर उत्पाद बनाने वाली कंपनियां आरएंडडी तथा अन्य गैर-व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए सालाना अधिकतम 4,500 जोड़ी फुटवियर आयात कर सकेंगी। (।प्र.)

टीवीएस अपाचे ने लांच किया नया कैपेन 'तू रेस लगा'

नई दिल्ली : टीवीएस मोटर ने अपनी अपाचे मोटरसाइकिल की 70 लाख यूनिट की बिक्री का आकड़ा पार कर लिया है। इस मौके पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान कंपनी ने नए कैपेन 'तू रेस लगा' का भी अनावरण किया। रैसिंग के शौकीनों के लिए इस बाइक को पहली बार वर्ष 2005 में उतारा गया था। पिछले सालों के दौरान टीवीएस अपाचे सेगमेंट में कई नए फीचर्स लेकर आई। 90 देशों में सफल लांच से अधिक शाहकों की लोबल कम्युनिटी के साथ टीवीएस अपाचे दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ने वाले परफॉर्मंस मोटरसाइकिल ब्रांड्स में से एक बनी हुई है। (।वि.)

टायरों में हवा कम होने से 4,500 करोड़ के पेट्रोल का नुकसान

नई दिल्ली, प्रे: भारत में वाहनों के टायरों में कम हवा होने से हर साल 4,500 करोड़ रुपये से अधिक मूल्य के 42 करोड़ लीटर से ज्यादा पेट्रोल का नुकसान हो रहा है। वाहन टायर विनिर्माता संघ (एटीएमए) की तकनीकी इकाई इंडियन टायर टेक्निकल एडवाइजरी कमेटी के अध्ययन से पता चला है कि बड़ी संख्या में ऐसे वाहन हैं जिनके टायरों में हवा यात्री वाहन विनिर्माता द्वारा अनुशंसित स्तर से कम होती है। इससे ईंधन की भारी बर्बादी, वाहन रखरखाव लागत में वृद्धि और सड़क सुरक्षा जोखिम बढ़ रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में देशभर में 1.3 लाख से अधिक यात्री वाहनों (जिनमें टैपहिया वाहन भी हैं) के टायर की जांच की गई। निष्कर्षों से पता चला कि 32 प्रतिशत टायर में हवा अनुशंसित स्तर से 20 प्रतिशत से अधिक कम थी। वहीं 21 प्रतिशत टायर में हवा अनुशंसित स्तर से 10 से 20% कम पाई गई। एटीएमए ने कहा कि टायर में हर एक पीएसआई (पाउंड प्रति वर्ग इंच) की कमी से ईंधन दक्षता लगभग 0.2 प्रतिशत घट जाती है। एटीएमए ने कहा, 'भारत में वार्षिक पेट्रोल खपत लगभग 56.77 अरब लीटर है और इसका लगभग पूरा उपयोग यात्री वाहनों (जिनमें टैपहिया वाहन भी हैं) द्वारा किया जाता है। इसका मतलब है कि हर साल लगभग 42.57 करोड़ लीटर पेट्रोल का नुकसान हो रहा है। मौजूदा खुदरा ईंधन कीमतों के आधार पर इस बर्बाद ईंधन का मूल्य 4,500 करोड़ से अधिक होता है।'



42 करोड़ लीटर से ज्यादा ईंधन का नुकसान हो रहा है प्रतिवर्ष, वाहन रखरखाव लागत में वृद्धि व सड़क सुरक्षा जोखिम भी बढ़ रहे

की कमी से ईंधन दक्षता लगभग 0.2 प्रतिशत घट जाती है। एटीएमए ने कहा, 'भारत में वार्षिक पेट्रोल खपत लगभग 56.77 अरब लीटर है और इसका लगभग पूरा उपयोग यात्री वाहनों (जिनमें टैपहिया वाहन भी हैं) द्वारा किया जाता है। इसका मतलब है कि हर साल लगभग 42.57 करोड़ लीटर पेट्रोल का नुकसान हो रहा है। मौजूदा खुदरा ईंधन कीमतों के आधार पर इस बर्बाद ईंधन का मूल्य 4,500 करोड़ से अधिक होता है।'

समझौते आइटी विभाग व दो पर्यटन विभाग के स्तर पर हुए हैं। ये निवेश विनिर्माण, डिजिटल गवर्नेंस, एआई, बुनियादी ढांचे व पर्यटन जैसे क्षेत्रों में होंगे। येएमओयू जिनंद ग्रुप, वरुण बेवरेजेस, टाटा समूह, गूगल, इंज माय ट्रिप, जनरल स्टील, पावर न्यूक्लियर समेत अन्य के साथ किए गए हैं।

14 समझौतों में से सर्वाधिक 10 एमओयू उद्योग विभाग ने किए हैं। वे

एआई को नियंत्रित करने के लिए मानव श्रम जरूरी

सीईए ने कहा-जिस देश में टेक्नोलाजी सिर्फ टूल है वहां आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का खतरा नहीं

2,100 से अधिक जीसीसी हैं फिलहाल भारत में 64



बी. अन्त नगेश्वरन

विस्तार हो रहा है, काम कम नहीं हो रहा है।

उद्योग संगठन सीआईआई के एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए गुरुवार को नगेश्वरन ने कहा कि एआई निश्चित रूप से आम काम या रोजमर्रा के काम को सस्ती दर पर आसानी से कर सकता है। हालांकि, भारत में काम कर रहे ग्लोबल कैपिटलिटी सेंटर (जीसीसी) इस प्रकार के नहीं हैं। भारत में टेक्नोलाजी के इस्तेमाल

का तरीका अलग है। जिस देश में ताकतवर टेक्नोलाजी को भाग्य मान लिया जाता है, उस देश को टेक्नोलाजी आकार देती है। जिस देश में टेक्नोलाजी को टूल माना जाता है, वहां उसे टूल के रूप में ही इस्तेमाल किया जाता है।



क्रिनेस से जुड़ी खबरों और अपडेट के लिए स्कैन करें या विजिट करें jagran.com

ट्राई ने टू कालर जैसे एप के खिलाफ कार्रवाई की अनुमति मांगी

नई दिल्ली, प्रे: दूरसंचार नियामक ट्राई ने सूचना-प्रायोगिकी मंत्रालय से टू कालर जैसे काल मैनेजमेंट एप के खिलाफ कार्रवाई की अनुमति मांगी है। नियामक ने परेशान करने वाली और धोखाधड़ी वाली काल पर लगाम लगाने के लिए कुछ समय पहले ही एक नियामक मसौदा जारी किया था, जिसमें काम मैनेजमेंट एप को भी रेगुलेट करने का प्रविधान शामिल है। हालांकि, टू कालर के सीईओ त्रुथिष्ठ ड्यूनड्यूनवाला ने ट्राई के इस कदम का विरोध किया है। प्रस्तावित मसौदे में कोई भी काल मैनेजमेंट एप (जो परेशान करने वाली काल और एसएमएस की पहचान करती है) असली बातचीत के लिए की गई काल को टैग या ब्लॉक नहीं करेगा और न ही कामशियल कम्युनिकेशन के लिए तय नंबर सीरीज से आने वाली इनकॉमिंग काल को रोकेंगी।

टीसीएस का पहली तिमाही में शुद्ध लाभ 4.61 प्रतिशत बढ़ा

नई दिल्ली, प्रे: देश की सबसे बड़ी सूचना प्रायोगिकी (आईटी) सेवा कंपनी टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) का चालू वित्त वर्ष 2026-27 की पहली तिमाही में शुद्ध लाभ सालाना आधार पर 4.61 प्रतिशत बढ़कर 13,349 करोड़ रुपये रहा है। वित्त वर्ष 2025-26 की समान तिमाही में कंपनी का शुद्ध लाभ 12,760 करोड़ रुपये रहा था। पहली तिमाही में कंपनी का राजस्व सालाना आधार पर करीब 14 प्रतिशत बढ़कर 72,275 करोड़ रुपये रहा। कंपनी ने बताया कि अप्रैल-जून तिमाही के दौरान उसके कर्मचारियों की संख्या में 9,200 से अधिक की बढ़ोतरी हुई, जिससे 30 जून, 2026 तक उसके कुल कर्मचारियों की संख्या बढ़कर 5,93,798 हो गई है। टीसीएस के सीईओ और एमडी के, कृतिवासन ने कहा कि भू-राजनीतिक और व्यापक आर्थिक चुनौतियों के बावजूद यह तिमाही कंपनी की निरंतर वृद्धि की गति और उसकी रणनीतिक स्थिति की मजबूती को दर्शाती है।

प्राथमिक क्षेत्र के कर्ज में शामिल हो सकता है ईवी के लिए लोन

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) की बिक्री लगातार बढ़ रही है, लेकिन इसे और प्रोत्साहित करने के लिए इसके लोन को और आसान बनाने की जरूरत महसूस की जा रही है। कुछ साल पहले नीति आयोग ने ईवी लोन को प्राथमिक सेक्टर के कर्ज में शामिल करने की सिफारिश की थी, लेकिन उस पर अभी तक उमल नहीं हो पाया। ईवी से जुड़े उद्योग संगठन लगातार इसकी मांग करते रहे हैं। सूत्रों का कहना है कि नियामक स्तर पर इस दिशा में गंभीरता से विचार किया जा रहा है और जल्द ही ईवी लोन को प्राथमिक सेक्टर में शामिल किया जा सकता है। अभी कई बैंक इलेक्ट्रिक कार खरीदने के लिए पेट्रोल-डीजल वाली कार की तुलना में कम दर पर लोन दे रहे हैं। हालांकि, इलेक्ट्रिक टैक्सि, बस और ट्रक की खरीदारी के लिए बैंकों से आसानी से लोन नहीं मिल पाता है। इलेक्ट्रिक रिक्शा और इलेक्ट्रिक टैक्सि खरीदने के लिए ग्राहकों को एनबीएफसी का रख करना पड़ता

राष्ट्रीय फलक

टाटा और निबे को मिल सकता है 1,600 करोड़ रुपये के आत्मघाती ड्रोन का आर्डर

नई दिल्ली, एएनआई: भारतीय सेना के लिए 100 किलोमीटर से अधिक दूरी तक मार करने वाली 840 आत्मघाती ड्रोन (लॉन्गरेंज म्यूनिशन) की खरीद प्रक्रिया में टाटा और निबे को आर्डर मिल सकता है। भारतीय कंपनियों टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स और निबे लिमिटेड सबसे कम बोलीदाता के रूप में उभरी हैं। इस सौदे का अनुमानित मूल्य करीब 1,600 करोड़ रुपये है।

रक्षा सूत्रों के अनुसार, टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स को कुल 840 ड्रोन में से 64 प्रतिशत की आपूर्ति का अवसर मिल सकता है। वहीं, निबे डिफेंस को 36 प्रतिशत ड्रोन की आपूर्ति मिलने की संभावना है। अनुमान है कि टाटा समूह को करीब 1,000 करोड़ रुपये और निबे लिमिटेड को लगभग 600 करोड़ रुपये

- ▶ टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स व निबे लिमिटेड सबसे कम बोलीदाता के रूप में उभरी
- ▶ टाटा को 1,000 करोड़ व निबे को 600 करोड़ रुपये का मिल सकता आर्डर



प्रतीकात्मक

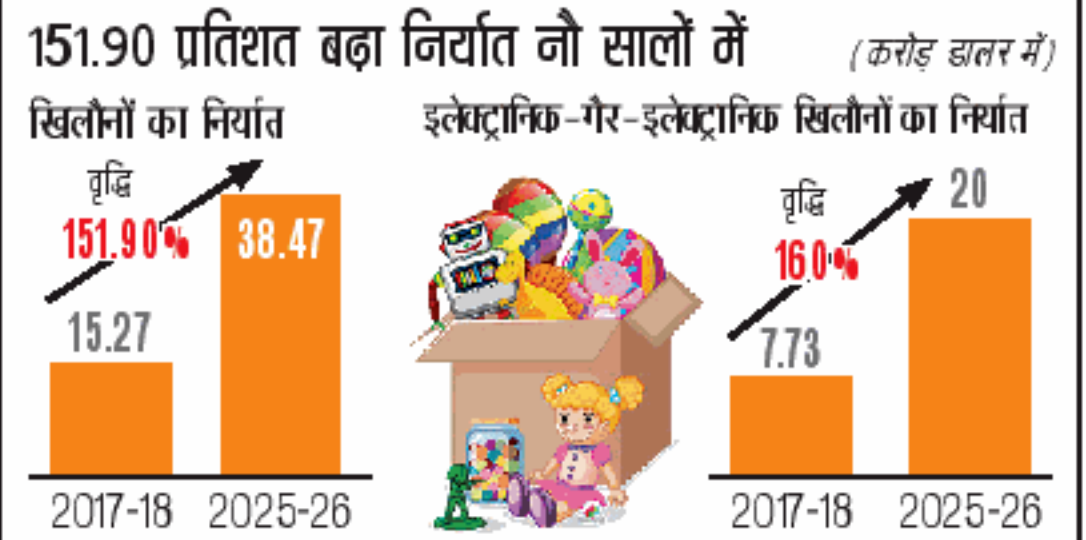
का आर्डर मिल सकता है। सेना ने तेज खरीद प्रक्रिया के तहत इस परियोजना के लिए कुछ दिन पहले बोलियां खोली थीं। तत्कनीकी मूल्यांकन में केवल तीन

6 कंपनी को 2026 की पहली छमाही में रिकार्ड बिक्री और इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) एवं छोटे शहरों से बढ़ती मांग से समर्थन मिला है। - हरदीपसिंह गुप्ता, सीईओ, वीएमडब्ल्यू वार यूडिया



रोजगार और उद्यमिता में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा खिलौना उद्योग

भारत ने अपने खिलौना उद्योग को तेजी से बढ़ते मैन्युफैक्चरिंग और निर्यात क्षेत्र में बढ़ा दिया है। घरेलू मांग में मजबूती, नीतिगत समर्थन, पारंपरिक शिल्प कौशल और देश में निर्मित खिलौनों की बढ़ती वैश्विक स्वीकृति के संयोजन से इसको लाभ मिल रहा है। यह क्षेत्र रोजगार और उद्यमिता में महत्वपूर्ण योगदानकर्ता के रूप में उभर रहा है, साथ ही व्यापारियों व छोटे व्यवसायों के लिए आजीविका उत्पन्न कर रहा है।



11.19 करोड़ डालर के निर्यात के साथ अमेरिका सबसे बड़ा बाजार बना हुआ है। निर्यात चार गुना से अधिक बढ़ा है। अन्य प्रमुख गंतव्यों में ब्रिटेन, पोलैंड, नीदरलैंड और जर्मनी शामिल हैं।

4.67 करोड़ डालर हुआ वैश्वीय गेम कंसोल और संबंधित उत्पादों का निर्यात। यह लगभग तीन गुना बढ़ा है।

13.70 करोड़ डालर हो गया उत्सव और मनोरंजन संबंधी वस्तुओं का निर्यात, लगभग 13.0 प्रतिशत बढ़ा।

66% की गिरावट आई पारंपरिक खिलौनों के आयात में सरकार ने कहा कि आयात के मोर्चे पर भी भारत की प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार हुआ है। इसी अवधि में पारंपरिक और शैक्षिक खिलौनों के आयात में 66 प्रतिशत की गिरावट आई है, जिससे घरेलू मैन्युफैक्चरिंग को मजबूती मिली है।

15.2 करोड़ डालर का ट्रेड सरप्लस भारत ने 2025-26 में खिलौनों की प्रमुख श्रेणियों में 15.2 करोड़ डालर का व्यापार अधिशेष या ट्रेड सरप्लस दर्ज किया जबकि 2017-18 में 21.30 करोड़ डालर का व्यापार घाटा हुआ था।

दोबूने हुए रोजगार खेल और खिलौनों के क्षेत्र में रोजगार 2018-19 में 8,685 से बढ़कर 2023-24 में 17,693 हो गया, जो उद्योग के बढ़ते आर्थिक योगदान को दर्शाता है।

खिलौना उद्योग की प्रगति कई नीतिगत पहलों का परिणाम इस क्षेत्र की वृद्धि का श्रेय कई नीतिगत पहलों को दिया, जिनमें 2020 में शुरू की गई खिलौनों के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना भी शामिल है, जो भारतीय संस्कृति और मूल्यों पर आधारित खिलौनों को बढ़ावा देती है, स्थानीय मैन्युफैक्चरिंग को प्रोत्साहित करती है और गुणवत्ता मानक मजबूत करती है।

गुणवत्ता नियंत्रण आदेश का भी दिखा असर एक महत्वपूर्ण सुधार गुणवत्ता नियंत्रण आदेश का कार्यान्वयन था, जिसके तहत घरेलू और विदेशी खिलौना निर्माताओं दोनों के लिए भारतीय मानक ब्यूरो प्रमाणन अनिवार्य कर दिया गया। मई 2026 तक, बीआईएस ने खिलौना सुरक्षा अनुपालन के लिए घरेलू निर्माताओं को 1,786 लाइसेंस और विदेशी निर्माताओं को 56 लाइसेंस दिए थे।

ताजा तनाव का कूड आयात पर सीमित असर

- भारत के लिए पिछले 100 दिनों में स्थिति कर्मोक्ष सामान्य रही, कंपनियों ने नए स्रोत जुटाए
- लंबे समय तक अस्थिरता रहती है तो एलपीजी और एलएनजी आपूर्ति हो सकती है प्रभावित



कि जून में भारत का कच्चे तेल आयात बढ़कर रिकार्ड 49.3 लाख बैरल प्रतिदिन पहुंच गया। रूस से भारत का कच्चे तेल आयात बढ़कर करीब 27 लाख बैरल प्रतिदिन हो गया, जो जून में भारत के कुल कच्चे तेल आयात का आधे से अधिक है। इससे रूस, भारत का सबसे बड़ा तेल आपूर्तिकर्ता बना हुआ है। उन्होंने कहा कि संभावित आपूर्ति बाधाओं के बावजूद ईंधन से कच्चे तेल की आपूर्ति भारतीय तेल शोधन कंपनियों के लिए निकट भविष्य में बढ़ा

स्रोत बनने की संभावना नहीं है। अमेरिकी प्रतिबंध नीति को लेकर अनिश्चितता, अनुपालन जोखिम और व्यावसायिक कारण इसके पीछे प्रमुख वजह हैं। रितोलिया ने कहा कि बाजार को अब एलपीजी (रसीई गैस) और एलएनजी (तरलीकृत प्राकृतिक गैस) आपूर्ति पर अधिक ध्यान देना चाहिए, क्योंकि इनके लिए निकट भविष्य में वैकल्पिक स्रोत कम हैं और खरादी क्षेत्र से आपूर्ति तथा जहाजरानी में बाधाओं का इन पर अधिक असर पड़ सकता है।

नई दिल्ली, आइएनएस: इंडी ने बैंक घोटाळा और मनी लॉड्रिंग से जुड़े मामले में अनिल अंबानी समूह से संबद्ध कंपनी ई-काम्लेक्स प्राइवेट लिमिटेड तथा उसके एक निदेशक के आवास पर छापेमारी कर कई महत्वपूर्ण दस्तावेज और साक्ष्य जब्त किए हैं। इंडी के अनुसार, तलाशी अभियान के दौरान संदिग्ध वित्तीय लेनदेन, अचल संपत्तियां और अन्य महत्वपूर्ण रिकार्ड बरामद हुए हैं, जो जांच में अहम साबित हो सकते हैं। जांच एजेंसी का दावा है कि रिलायंस होम फाइनैस लिमिटेड (आरएचएफएल) और रिलायंस कमर्शियल फाइनैस लिमिटेड (आरसीएफएल) द्वारा जुटाए गए हजारों करोड़ रुपये के सार्वजनिक धन को शेल और समूह की अन्य कंपनियों के माध्यम से दूसरी जगह भेजा गया।

चिंतन ऑस्ट्रेलिया से ‘नाभिकीय’ समझौता लाएगा बदलाव

व वाड पर अमेरिका के ठंडे रख के बाद भारत ने अपने स्तर पर क्वाड के अन्य प्रमुख साझेदार देशों जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ संबंधों को नई गति देने की रणनीति अपनाई है। क्वाड चार प्रमुख लोकतांत्रिक देशों भारत, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका और जापान का रणनीतिक समूह है, जिसका उद्देश्य हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति, स्थिरता और नियम-आधारित व्यवस्था को मजबूत करना है। बदलते वैश्विक समीकरणों और बढ़ती भू-राजनीतिक चुनौतियों के बीच भारत अब अपने द्विपक्षीय संबंधों को अधिक मजबूत और व्यावहारिक आधार देने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। इसी क्रम में पहले जापान की प्रधानमंत्री सनार्ए ताकाइची ने भारत का दौरा किया, जहां दोनों देशों के बीच कई महत्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर हुए। इससे स्पष्ट है कि भारत अपने भरोसेमंद साझेदार देशों के साथ दीर्घकालिक रणनीतिक और आर्थिक सहयोग को प्राथमिकता दे रहा है। अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ऑस्ट्रेलिया यात्रा भी महत्वपूर्ण मानी जा रही है। इस यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच यूरेनियम आपूर्ति से जुड़ा बहुप्रतीक्षित असेन्य परमाणु समझौता हुआ है। माना जा रहा है कि भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच यह ‘नाभिकीय’ समझौता ऊर्जा सुरक्षा के क्षेत्र में बड़ा बदलाव लेकर आएगा। इसके साथ ही रक्षा, समुद्री सुरक्षा, महत्वपूर्ण एवं दुर्लभ खनिज, साइबर सुरक्षा, आपूर्ति शृंखला, अंतरिक्ष सहयोग और निवेश सहित लगभग 18 महत्वपूर्ण समझौतों को अंतिम रूप दिया गया है। डिफेंस इनोवेशन कॉरिडोर, मैरीटाइम सिक्योरिटी रोडमैप और यूरेनियम सप्लाई एग्रीमेंट जैसे समझौते दोनों देशों की रणनीतिक साझेदारी को नई मजबूती देंगे। ये समझौते केवल द्विपक्षीय संबंधों का विस्तार नहीं हैं, बल्कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में बदलते सामरिक समीकरणों का भी स्पष्ट संकेत हैं। बढ़ती साझेदारी यह दर्शाती है कि दोनों लोकतांत्रिक देश अब केवल व्यापारिक साझेदार नहीं, बल्कि दीर्घकालिक रणनीतिक सहयोगी बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। इस परमाणु समझौते के बाद भारत के लिए ऑस्ट्रेलिया से यूरेनियम की व्यावसायिक आपूर्ति का मार्ग खुल जाएगा। दोनों देशों ने क्रिटिकल मिनरल्स कॉरिडोर विकसित करने का भी निर्णय लिया है। इलेक्ट्रिक वाहन, बैटरी, सेमीकंडक्टर, रक्षा उपकरण और आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक उद्योगों के लिए आवश्यक लिथियम, कोबाल्ट तथा अन्य महत्वपूर्ण खनिजों की उपलब्धता भविष्य की वैश्विक प्रतस्पर्धा में निर्णायक भूमिका निभाएगी। अंतरिक्ष क्षेत्र में भी दोनों देशों के बीच सहयोग बढ़ेगा। ऑस्ट्रेलिया के कोकोस (कीलिंग) द्वीप पर स्पेस ट्रैकिंग र्मेंशनल स्थापित किए जाने से भारत के महत्वाकांक्षी गगनयान मिशन सहित अन्य अंतरिक्ष अभियानों को तकनीकी सहायता मिलेगी। ऑस्ट्रेलिया ने भारत की तीन बहुमूल्य धार्मिक एवं ऐतिहासिक कलाकृतियां लौटाने की घोषणा की है। इनमें देवी भद्रकाली की अकृति वाला धातु का त्रिशूल, भगवान शिव के वाहन नंदी की पत्थर की प्रतिमा तथा छह मुख वाले भगवान कार्तिकेय की दुर्लभ प्रतिमा शामिल हैं। इनकी स्वदेश वापसी दोनों देशों के बीच बढ़ते विश्वास और सांस्कृतिक सहयोग का भी प्रतीक है। कुल मिलाकर प्रधानमंत्री की यह यात्रा संकेत देती है कि भारत अपनी ऊर्जा सुरक्षा, रक्षा क्षमता, तकनीकी प्रगति और आर्थिक हितों को मजबूत करने के लिए हर आवश्यक कदम उठाने को तैयार है। भारत रक्षा समेत हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की ओर बढ़ रहा है। ऑस्ट्रेलिया के साथ हुआ यह ‘नाभिकीय’ समझौता इसी नई सोच और दूरदर्शी रणनीति का महत्वपूर्ण उदाहरण है।

जल संरक्षण बाल मुकुन्द ओझा



आज पानी बचाएंगे तो भविष्य होगा सुरक्षित

देश में हर साल मानसून आता है और सर्वत्र बारिश होती है, इसके बावजूद लोग पानी के लिए तगस जाते हैं। इसका एक मुख्य कारण है हम वर्षा जल का संचयन नहीं कर पाते। मौसम विभाग की मानें तो मानसून भारत में प्रवेश कर चुका है। मानसून अपने साथ अपार खुशियां लेकर आता है। लोगों को पीने के लिए जहां पानी मिलता है, वहीं किसान अपने खेतों में नुबवाई शुरू कर देते हैं। बारिश से कई जगह बाढ़ की हालत भी हो गई है। वर्षा जल की एक-एक बूंद अनमोल है। जल है तो जीवन है। इसका संचय, संरक्षण से ही मानव जीवन की रक्षा संभव है। जल की अनावश्यक बचानी नहीं होने दें। जल संरक्षण के लिए सभी को जागरूक होना होगा और समूहिक प्रयास करना होगा। इससे जल संरक्षण की दिशा में बेहतर परिणाम देखने को मिलेंगे। देश में जल संसाधन सीमित और दुर्लभ हैं। पानी घट रहा है और साल 2050 तक यह कमी एक बड़ा संकट बन सकती है। ऐसे में हमें वर्षा जल संचयन जैसे जल संरक्षण के स्थायी तरीकों को अपनाना चाहिए। देशभर में मानसूनी बारिश का दौर जारी है। राजधानी दिल्ली सहित देश के कई हिस्सों में मूसलाधार बारिश हुई। भूखलन एवं वर्षा के बाद विभिन्न घटनाओं में अनेक लोगों की मौत हो गई। हर साल की तरह इस साल भी देश में मानसून की एंट्री के साथ ही बाढ़ की तबाही भी शुरू हो गई है। वर्षा के जल को किसी खास माध्यम से संचय करने या इकट्ठा करने की प्रक्रिया को वर्षा जल संचयन कहा जाता है। विश्व भर में पेयजल की कमी एक संकट बनती जा रही है। इसका कारण पृथ्वी के जलस्तर का लगातार नीचे जाना भी है। इसके लिए अधिशेष मानसून अपवाह जो बहकर सागर में मिल जाता है, उसका संचयन और पुनर्भरण किया जाना आवश्यक है ताकि भूजल संसाधनों का संवर्धन हो पाए। अकेले भारत में ही व्यवहार्य भूजल भण्डारण का आकलन 214 बिलियन घन मी. (बीसीएम) के रूप में किया गया है, जिसमें से 160 बीसीएम की पुनः प्राप्ति हो सकती है। इस समस्या का एक समाधान जल संचयन है। यहां सवाल यह उत्पन्न होता है कि भारी मात्रा में मानसूनी जल उपलब्ध होने के बावजूद हम जल संकट का सामना क्यों कर कर रहे हैं। इसका जवाब है कि हमने अपने परंपगत जल स्रोत समाप्त कर दिए। भारत को कुएं, बावड़ी और तालाबों का देश कहा जाता है। यहां नदियां हर समय पानी से लबालब भरी होती थीं। इसके बावजूद हम जल समस्या का सामना कर रहे हैं। यह समस्या हर साल गहरती जा रही है। खेत तो दूर की बात, पीने को भी पानी नहीं मिल रहा है। यही कारण है कि भारत सरकार ने जल शक्ति मंत्रालय का गठन कर जल संचयन का बोड़ा उठाया है। हमारे देश में हर साल मानसून में बहुत सा पानी व्यर्थ बह जाता है, जिसके संचयन की कारगर व्यवस्था अब तक नहीं खोजी जा सकी है। साल भर में होने वाली बारिश का कम से कम 31 प्रतिशत पानी धरती के भीतर रिचार्ज के लिए जाना चाहिए। जबकि केवल 13 प्रतिशत पानी ही धरती में समाता है। रिचार्ज नहीं होने की वजह से भूगर्भ में पानी की कमी हो जाती है और उसका खामियाजा हमें भुगतना पड़ता है। मौसम विभाग के अनुसार इस वर्ष देश में औसत बारिश हो सकती है। इस बारिश का संचय कर पेयजल संकट से निपटने के साथ खेतों में बेपर पैदावार हासिल की जा सकती है। देश इस समय भीषण जल संकट से गुजर रहा है और इस आसन्न संकट पर जल्द काबू नहीं पाया गया तो हालत बरतार होने की सम्भावना है। भारत अब तक के सबसे बड़े जल संकट से जूझ रहा है। करीब 60 करोड़ लोग पानी की कमी का सामना कर रहे हैं। करीब 75 प्रतिशत घरों में पीने का पानी उपलब्ध नहीं है। साथ ही, देश में करीब 70 प्रतिशत पानी पीने लायक नहीं है। साफ और सुरक्षित पानी नहीं मिलने की वजह से हर साल करीब दो लाख लोगों की मौत होती है। पृथ्वी पर कुल जल का अढ़ाई प्रतिशत भाग ही पीने के योग्य है। इनमें से 89 प्रतिशत पानी कृषि कार्यों एवं 6 प्रतिशत पानी उद्योग कार्यों पर खर्च हो जाता है। शेष 5 प्रतिशत पानी ही पेयजल पर खर्च होता है। यही जल हमारी जिन्दगानी को संवाराता है। अगर बरसात के बाद नदी-नालों से बहने वाले पानी का प्रभावी तरीके से संग्रहण किया जाए तो पानी कई गुना और ज्यादा मिलने लगेगा। वैश्विक संस्थाओं की लगातार चेतावनियों का लगता है लोगों पर कोई असर नहीं पड़ा है। विभिन्न संगठनों की पानी सम्बन्धी रिपोर्टों में साफ कहा गया है कि भूगर्भ में अब पानी नहीं रहा है और वर्षा की प्रति घंटा सहजने में हम नक़्सा साबित हुए हैं। विश्वभर भारत में पानी के प्रति गौर लापरवाही का परिणाम आम आदमी को शीघ्र भुगतना होगा। दुनियाभर में 200 करोड़ से ज्यादा लोग साफ पानी और स्वच्छता जैसी बुनियादी सुविधाओं से वंचित हैं।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)



गुद्दा डॉ . आशीष वशिष्ठ

भारत और पाकिस्तान के बीच संबंध मई 2025 के बाद से काफी तनावपूर्ण बने हुए हैं। जब जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले में 20 से ज्यादा पर्यटकों को पाकिस्तानी आतंकियों ने मारा था। इसके बाद चार दिनों तक दोनों देशों के बीच गोलीबारी और ड्रोन हमलों का सिलसिला चला। इस घटना के बाद से दोनों देशों के बीच सरकारी स्तर पर कोई औपचारिक बातचीत नहीं हुई है। व्यापार लगभग बंद है, दूतावास कमजोर स्तर पर चल रहे हैं और लोगों के बीच संपर्क भी बेहद सीमित है। भारत हमेशा बातचीत का पक्षधर रहा है, लेकिन पाकिस्तान जब तक आतंकवाद को पूरी तरह समाप्त करने का ठोस संकल्प नहीं दिखाता, तब तक किसी भी वार्ता का कोई अर्थ नहीं है।

छोटे-छोटे संकल्प हमारा आत्मविश्वास बढ़ाते हैं



संकलित दर्शन

जिस प्रकार किसी भी पूजा को प्रारंभ करने से पूर्व हाथ में जल लेकर संकल्प लिया जाता है उसी प्रकार किसी भी कार्य को करने के लिए उसे करने का संकल्प लिया जाता है। बगैर संकल्प हम आगे नहीं बढ़ सकते हैं। संकल्प लेने के लिए इच्छाशक्ति की जरूरत होती है। संकल्प के पश्चात प्रयास प्रारंभ होते हैं। जब संकल्प दृढ़ होता है तो प्रयास को हिम्मत मिलती है, विजय की राह आसान हो जाती है। हमारी सफलता हमारे संकल्प पर निर्भर करती है। हम जितना भरोसा अपने संकल्प पर करेंगे उसी अनुपात में हमें सफलता प्राप्त होगी। यदि हमारा संकल्प विजय का है तो हमारी सफलता भी निश्चित है। संकल्प सकारात्मक ऊर्जा के रूप में सह प्रेरक का काम करता है। जीवन में छोटे-छोटे संकल्प लेते रहना चाहिए। जब हम छोटे-छोटे संकल्पों को पूर्ण करते हैं तो आत्मविश्वास और हमारी क्षमता में वृद्धि होती है। दृढ़ संकल्प में असीम शक्ति होती है, जो व्यक्ति को किसी भी प्रकार की बाधाओं से जूझने में सक्षम बनाती है। हालांकि, संकल्प लेकर उन्हें भूलना भी आम बात है। अक्सर हम देखते हैं कि नशे के आदी लोग रोज संकल्प लेते हैं कि वे अब आगे से नशा नहीं करेंगे, किंतु वे ऐसा नहीं कर पाते हैं, क्योंकि उनके संकल्प में दृढ़ता की कमी होती है। दृढ़ संकल्प शक्ति जीवन में सफलता प्राप्त करने का मूल मंत्र है। जो संकल्प के साथ जीता है वह साधक होता है। कहते हैं कि एक सफल और असफल व्यक्ति के बीच में न तो योग्यता का अंतर होता है और न ही ज्ञान का।

अंतर्मन



करंट अफेयर

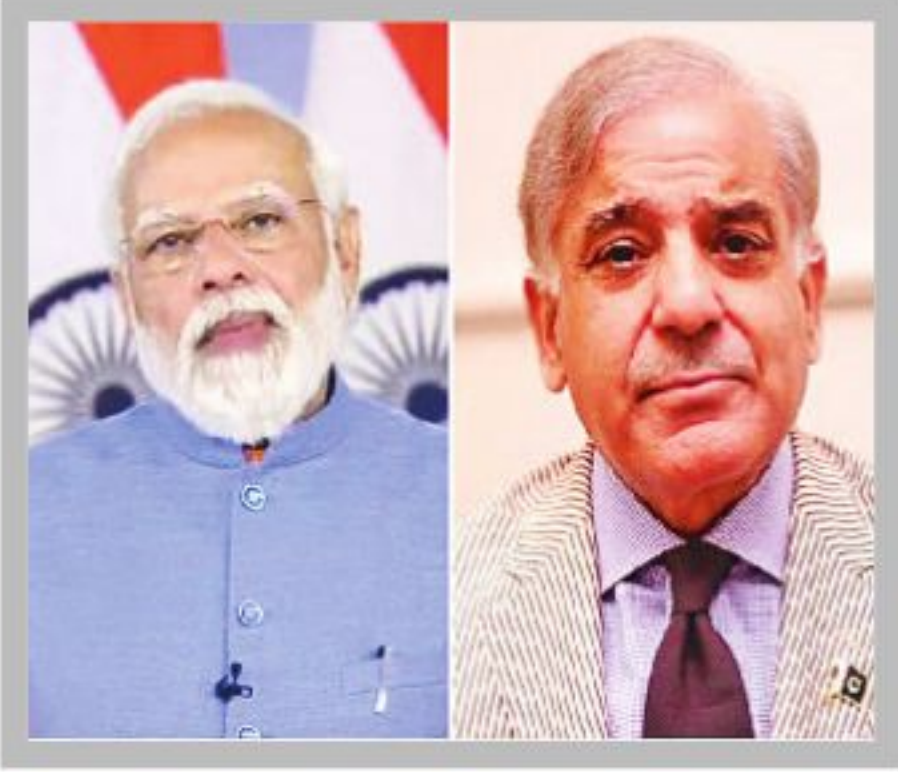
मेक्सिको के गांव में मादक पदार्थ तस्करों के ड्रोन हमले

मेक्सिको के एक गांव में मादक पदार्थ तस्करों के गिरोह ने बुधवार सुबह छह बजे ड्रोन से हमले किए। स्थानीय लोगों ने इसकी जानकारी दी। गुआजेस डी अयाला नामक गांव के ग्रामीणों को कई हप्तों से ‘ला नुएवा फमिलिया मिओआकाना’ नाम के मादक पदार्थ तस्कर गिरोह से चेतावनी मिल रही थी। हालांकि उनकी मदद की गुहार पर किसी ने ध्यान नहीं दिया क्योंकि उस समय मेक्सिको सिटी, ग्वाडलहारा और मॉन्टेरी जैसे बड़े शहरों में फुटबॉल विश्वकप आयोजन को लेकर जश्न का माहौल था। मारिलु सोलेरियो नाम की 24 वर्षीय प्रत्यक्षदर्शी ने बताया कि मादक पदार्थ गिरोह के तस्करों और समुदाय के सतर्कता विभाग के बीच गोलीबारी शुरू होने के बाद 70 अन्य महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों ने पास के एक बंद पड़े मेडिकल क्लिनिक में शरण लिया। अपने आश्रय स्थल से सोलेरियो ने फोन पर हुई बातचीत में फुटबॉल टूर्नामेंट का जिक्र करते हुए कहा, ‘एक तरफ कुछ लोग फुटबॉल के गोल का जश्न मना रहे हैं, तो दूसरी तरफ बम ले जा रहे ड्रोन लोगों की जान ले रहे हैं।’ जिन जगहों पर विश्व कप खेला जा रहा है वहां के लोगों की सुरक्षा करने के बजाय (मेक्सिको की सरकार को) हम जैसे लोगों की सुरक्षा करनी चाहिए जिन्होंने कभी कुछ गलत नहीं किया।’



व्यवहार भी देखने को मिला है। पिछले एक दशक से इस विषय पर शोध कर रहे विशेषज्ञ ने फिटनेस ट्रैकिंग से जुड़े पांच प्रमुख जैडिमा की पहचान की है। विशेषज्ञ के अनुसार, पहला खतरा प्रतिदिन 10,000 कदम चलने के लक्ष्य को लेकर है। उन्होंने कहा कि यह लक्ष्य 1960 के दशक में जापान में एक पेडोमीटर के प्रचार अभियान से जुड़ा था और इसे सभी लोगों के लिए वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित मानक नहीं माना जाता। कई शोध बताते हैं कि अधिकतर व्यक्तों के लिए लगभग 7,000 कदम भी पर्याप्त और अधिक व्यावहारिक हो सकते हैं।

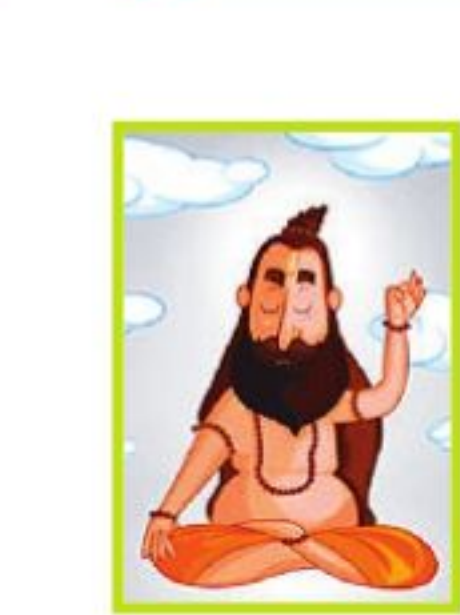
आत्मा तक से परिचित हैं और कई आतंकी हमलों के साक्षी रहे हैं। ओपी शाह, मनोज झा, जवाहर सरकार आदि कितने बड़े कूटनीतिज्ञ हैं, यह हम नहीं जानते, लेकिन सूची में जो 61 नाम भारतीयों के हैं, वे विश्वासपूर्वक प्रधानमंत्री मोदी के कट्टर विरोधी हैं और पाकिस्तान के अनुयायी चेहरे हैं। आज उन्हें कौन पछता है? क्या प्रासंगिकता है इनकी? क्या इनमें से किसी ने भी पाकिस्तान के प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर आग्रह किया है कि आतंकी सांपों को पालना बंद करें? आतंक के अड्डे समाप्त किए जाएं। सरकार और फौज आतंकियों की आर्थिक मदद करना और उन्हें ‘जहादी समर्थन’ देना भी



बंद करें। पत्र लिखने वालों की मंशा क्या है, यह वे स्वयं बेहतर जानते हैं। पत्र लिखने वालों में से किसी ने आतंकवाद में अपने किसी परिजन को खोया है? यह पीड़ा, हत्या, दर्द, खालीपन, सुने आंगन, उजड़े सिंदूर को कैसे और कौन भूल सकता है? और फिर क्या गारंटी है कि संवाद और संबंधों की पुनर्स्थापना के बाद सीमा पर तनाव कम हो जाएगा? सीमा पार से आतंकी भेजे नहीं जाएंगे? वैश्विक मंचों पर, कश्मीर की आड़ में, भारत-विरोधी दुष्प्रचार थम जाएंगे? पत्र से जुड़े लोग इससे भी भलीभांति परिचित होंगे कि पाकिस्तानी सत्ता प्रतिष्ठान का केंद्र हमेशा से सेना रही है और वर्तमान सेना प्रमुख तो इतने शक्तिशाली बना दिए गए हैं कि उन्हें फौलड मार्शल की पदवी प्राप्त हो चुकी है।

वास्तव में, आतंकवाद की चर्चा जब भी होती है, तो ये समर्थक हकलाने लगते हैं या अंशिट भाषा का प्रयोग करते हैं। पाकिस्तान के पूर्व विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो आजकल ‘एटमी युद्ध’ की धमकी दे रहे हैं। पाकिस्तान के कांथित उप प्रधान मंत्री इशराक डार सिंधु नदी का पानी रोकना युद्ध की कार्रवाई मानते हैं। क्या ‘ऑपरेशन सिंदूर’ के हमले भूल गया है पाकिस्तान, जिनमें उसके 11 एयरबेस को मिट्टी-मलबा कर दिया गया था? ऐसे

गुरु की बात को गिरिधारी भी नहीं टाल सकते



संकलित प्रेरणा

वृंदावन में एक संत के पास कुछ शिष्य रहते थे उनमें से एक शिष्य मंद बुद्धि का था। एक बार गुरु देव ने सभी शिष्यों को अपने करीब बुलाया और सब को एक मास के लिए ब्रज में अलग-अलग स्थान पर खने की आज्ञा दी और उस मंद बुद्धि को बरसाने जाकर रहने को कहा। मंद बुद्धि ने बाबा से पूछा बाबा मेरे रहने खाने की व्यवस्था वहां कौन करेगा। बाबा ने हंस कर कह दिया राधा रानी, कुछ दिनों बाद एक-एक करके सब बालक लौट आए पर वो मंद बुद्धि बालक नहीं आया। बाबा को चिंता हुई की दो मास हो गए मंद बुद्धि बालक नहीं आया जाकर देखना चाहिए, बाबा अपने शिष्य की सुध लेने बरसाने आ गए। बाबा ने देखा एक सुन्दर कुटिया के बाहर एक सुन्दर बालक बहुत सुन्दर भजन कर रहा है, बाबा ने सोचा क्यों ना इन्ही से पूछा जाए। बाबा जैसे ही उनके करीब गए वो उठ कर बाबा के चरणों में गिर गया और बोला आप आ गए गुरु देव! बाबा ने पूछा ये सब कैसे तु ठीक कैसे हो गया शिष्य बोला बाबा आपके ही कहने से किशोरी जी ने मेरे रहने खाने पीने की व्यवस्था की और मुझे ठीक कर भजन करना भी सिखाया। बाबा अपने शिष्य पर बरसती किशोरी जी की कृपा को देख खुब प्रसन्न हुए और मन ही मन सोचने लगे मेरे कारण मेरी किशोरी जी को कितना कष्ट हुआ। उन्होंने मेरे शब्दों का मान रखते हुए मेरे शिष्य पर अपनी सारी कृपा उडेल दी। इसलिए कहते है गुरु की बात को गिरिधारी भी नहीं टाल सकते।

टैंड

'गीन झड़प' पोर्टल

दिल्ली सरकार ने पेंड लगाने के लिए 'गीन झड़प' पोर्टल शुरू किया है, जिसके जरिए मुक्त पौधे मिलेंगे। जहाँ भी जमीन उपलब्ध हो, लोगों को पेंड लगाने चाहिए और 'गीन दिल्ली' के संकल्प को पूरा करना चाहिए।

- अमित शाह, केंद्रीय गृहमंत्री

खेती-बाड़ी व्यवस्था

रूठाओं को खेती को नए नजरिए से देखने को जरूरत है। अपनी इनीशिएशन, सिंक्रस और एटरनोवैगेशन के जरिए वे एक ऐसी खेती-बाड़ी व्यवस्था बनाते हैं योगदान दे सकते हैं जो आधुनिक, आत्मनिर्भर, स्मार्ट, प्रकृति-अनुकूल और टिकाऊ हो।

-राजनाथ सिंह, रक्षामंत्री

ऊर्जा सुरक्षा

भारत ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता और स्वच्छ ऊर्जा के माफ़में नो लॉ मानक स्थापित कर रहा है। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच यूरेनियम की आपूर्ति को लेकर हुआ यह महत्वपूर्ण समझौता देश की ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करेगा।

- सम्राट घोषरी, सीएन, बिहार

विरोध दबाने की कोशिश

सटकार इवेंजौल के मामले में दूसरे देशों के उदाहरण देखर लोगों के हित्थ को दबाने की कोशिश कर रही है। सच तो यह है कि जर्मनी, फ्रांस और अमेरिका में ईडो से ज्यादा वोड वॉलर ईधन का इस्तेमाल भी नहीं हो रहा है। जापान ने अभी फिल ईड का इस्तेमाल हो रहा है।

-अरविंद केजरीवाल, पूर्व सीएम, नई दिल्ली

अपने विचार हरिभूमि कार्यालय

टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फ़ैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से hbcgpati@gmail.com पर भेज सकते हैं।

साझेदारी का दायरा

वैश्विक स्तर पर तेजी से बदलती भू-राजनीतिक परिस्थितियों के बीच अलग-अलग देशों में आपसी सहयोग के लिए जिस स्तर पर नए समीकरण बन रहे हैं, उससे साफ है कि अब पुराने ध्रुवों के विकल्प तैयार हो रहे हैं और विकसित तथा सक्षम देशों को भी अपने बेहतर भविष्य का रास्ता तैयार करना पड़ रहा है। इस संदर्भ में देखें, तो भारत और आस्ट्रेलिया के बीच गुरुवार को जिस स्तर पर सहयोग और साझेदारी की घोषणा हुई, वह मौजूदा दौर की जरूरतों के मद्देनजर एक महत्त्वपूर्ण पहल है। गौरतलब है कि पिछले कुछ समय के दौरान मुक्त व्यापार के क्षेत्र में भारत ने कई देशों के साथ समझौते किए हैं, जिसके तहत देश की अर्थव्यवस्था के विस्तार के लिए नई संभावनाएं तैयार करने की कोशिश की गई है। इसी क्रम में अब भारत और आस्ट्रेलिया के बीच रक्षा और सुरक्षा सहयोग को नई मजबूती देने जैसे कई अहम मुद्दों पर सहमति बनी है। साथ ही परमाणु ऊर्जा, समुद्री सुरक्षा, साइबर तकनीक और अंतरिक्ष तथा व्यापार के क्षेत्र में सहयोग का दायरा बढ़ाने का खाका भी पेश किया गया। इसके अलावा, आतंकवाद के खिलाफ साझा लड़ाई, हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति और स्थिरता लाने तथा अन्य मोर्चों पर जारी तनावों के हल के लिए संवाद और कूटनीतिक प्रयास जारी रखने पर भी सहमति बनी।

जाहिर है, भारत और आस्ट्रेलिया के बीच साझेदारी के सफर के विस्तार की जो पहल हुई है, उसका आधार अगले कुछ दशकों में वैश्विक स्तर पर आर्थिक और कूटनीतिक स्तर पर बदलते ध्रुव और उसी मुताबिक तैयार होते समीकरण हैं, जिसमें सहयोग के नए आयाम तैयार हो रहे हैं। हालांकि आस्ट्रेलिया के साथ भारत का पहले से ही साझेदारी का लंबा सफर रहा है, लेकिन ताजा समझौतों में परमाणु ऊर्जा और दुर्लभ खनिजों के मामले में सहयोग के जिस मोर्चे पर ठोस समझदारी बनी है, वह आने वाले वक्त में बेहद अहम साबित हो सकती है। आस्ट्रेलिया के पास दुनिया भर के यूरेनियम संसाधनों का एक बड़ा हिस्सा है, मगर कुछ कानूनी और तकनीकी अड़चनों की वजह से भारत को अब तक इसका लाभ नहीं मिल सका। अब ताजा समझौते के बाद भारत को अपनी परमाणु ऊर्जा संबंधी जरूरतों को पूरा करने के लिए ईंधन का एक अहम स्रोत मिल सकेगा।

हालांकि मौजूदा दौर में विश्व जिस स्तर के तनावों से गुजर रहा है, उसमें यूरेनियम के उपयोग को लेकर आशंकाएं स्वाभाविक हैं। मगर इस मसले पर दोनों देशों ने यह साफ किया है कि सिर्फ शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए दीर्घकालिक यूरेनियम निर्यात की अनुमति होगी और अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी के तय सुरक्षा प्रावधानों का पूरा ध्यान रखा जाएगा। साथ ही, दोनों देश खनिज गलियारों को विकसित करने के क्षेत्र में भी साझेदारी करेंगे, जिससे चीन पर निर्भरता कम होगी। समुद्री सुरक्षा सहयोग के मसले पर हुए समझौते के बाद यह भी उम्मीद की जा रही है कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति, स्थिरता, नौवहन की स्वतंत्रता और नियम-आधारित व्यवस्था को मजबूत करने के लिए साझा प्रयासों को नई रफ्तार मिलेगी और इस क्षेत्र में चीन के बढ़ते दबदबे के बरक्स संतुलन का एक मोर्चा खड़ा किया जा सकेगा। जाहिर है, दोनों देशों के बीच संबंधों में विविधता लाने पर जोर देने के प्रयासों के तहत सहमति बनी है। मगर यह भी ध्यान रखने की जरूरत होगी कि इसका मूल आधार एक-दूसरे की जरूरतों के लिए समानता पर आधारित आर्थिक सहयोग हो और यह भारतीय हितों को सुनिश्चित करने वाला हो।

ढहती व्यवस्था

किसी एक हादसे के बाद का सबक यह होना चाहिए कि ऐसे तमाम इंजामों को लेकर हर स्तर पर सतर्कता बरती जाए, जिससे भविष्य में वैसी स्थितियों से बचा जा सके। दिल्ली के साकेत इलाके में हाल ही में एक इमारत गिरने और उसमें कई लोगों के मारे जाने की त्रासदी सामने आई थी। मगर उसके बाद भी संबंधित महकमों को नींद से जागना जरूरी नहीं लगा। नतीजतन, दिल्ली के ही रोहिणी इलाके में बुधवार को भारी बारिश के दौरान एक चारमंजिला इमारत ढह गई, जिसमें कम से कम तीन लोगों की जान चली गई। सवाल है कि ऐसा किसकी लापरवाही से हुआ और इसके लिए कौन जिम्मेदार है। गौरतलब है कि हादसे से पहले इमारत लगभग बन चुकी थी और अंतिम दौर में जल आपूर्ति और अपशिष्ट निकासी के लिए पाइप लगाने का काम चल रहा था। ऐसे में इमारत गिरने की आखिर क्या वजह हो सकती है? अगर इस इमारत का नक्शा ‘सरल योजना’ के तहत मंजूर किया गया था, तो क्या यह सुरक्षा मानकों पर खरा था? इसकी पहले से जांच होती, तो शायद हादसा टल सकता था।

यह बेवजह नहीं है कि सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को देश भर में गैरकानूनी या असुरक्षित इमारतों और बुनियादी ढांचे से जुड़े एक मामले की सुनवाई करते हुए दिल्ली, गुरुग्राम, पटना और तमिलनाडु के अधिकांशियों को सख्त निर्देश दिए हैं। अदालत ने उन जर्जर इमारतों को गिराने या खाली कराने के लिए की गई कार्रवाई के संदर्भ में स्थिति का ब्योरा मांगा है, जिनसे आपदा का खतरा हो सकता है। दरअसल, वर्षों से आवास निर्माण संबंधी नियमों की अनदेखी होती आई है। यही वजह है कि अनियोजित तरीके से शहर बसते चले गए। पुणे में तो कचरे के पहाड़ के पास इमारत खड़ी कर ली गई। नतीजा यह कि बुधवार को बारिश के बाद कचरे के भारी दबाव की वजह से इमारत गिर गई। दिल्ली में जिस तरह से अनियोजित निर्माणों को बढ़ावा मिला है, उसी का परिणाम है कि आए दिन इमारतें गिरती हैं। सवाल है कि इस तरह की घटनाओं को रोकने के लिए जवाबदेही क्यों नहीं तय की जा रही है। गैर अधिसूचित क्षेत्रों और अनधिकृत कालोनियों में प्रायः भवन उपनियमों का उल्लंघन कर कई मंजिला इमारतें बनाई जाती हैं, तो इसे क्यों नहीं रोका जाता।

कल्पमेधा

जंगलों से गुम होती महुआ की विरासत



आदित्य कुमार यादव

मध्य भारत के जंगलों में पिछले कई वर्षों के अनुभव बताते हैं कि महुआ के वृक्ष धीरे-धीरे बदल रहे हैं, लेकिन यह बदलाव अक्सर आंकड़ों और दस्तावेजों से ओझल रह जाता है। वन से जुड़े विशेषज्ञ गाजीपुर, बलिया और जौनपुर जैसे जिलों में इसे बारीकी से महसूस करते रहे हैं।

गांवों की अर्थव्यवस्था में महुआ सिर्फ एक वृक्ष नहीं, बल्कि एक जीवन-रेखा है, खासकर उन परिवारों के लिए जो जंगलों पर निर्भर हैं। गर्मी की शुरुआत में जब खेतों में काम कम हो जाता है, तब महुआ के फूल आजीविका का सहारा बनते हैं। सुबह-सुबह कई महिलाएं और बुजुर्ग टोकरियां लेकर इन फूलों को बीनने निकलते हैं। इसके बीजों से निकलने वाला तेल रसोई और औषधि का हिस्सा होता है, जबकि महुआ के पेड़ की घनी छांव पशुओं के लिए आराम की जगह बनाती है, लेकिन अब यह मौसमी दृश्य धीरे-धीरे कम होता दिख रहा है। महुआ केवल एक वन वृक्ष नहीं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था और शुष्क वन पारिस्थितिकी का आधार है। इसके फूल भोजन, पेय और पशु चारे के रूप में उपयोग होते हैं, जबकि बीजों से निकला तेल खाद्य, औषधीय और घरेलू उपयोग में आता है। इसकी पत्तियां पारंपरिक पत्तल-दोने बनाने में काम आती हैं और घनी पत्तियां गर्मी में पशुओं तथा वन्यजीवों को छाया प्रदान करती हैं। कृषि के सुस्त मौसम में इसके फूल मधुमक्खियों जैसे परागणकों के लिए भी भोजन के महत्त्वपूर्ण स्रोत होते हैं।

महुआ की अहमियत केवल इसके प्रत्यक्ष उपयोगों तक सीमित नहीं है। यह शुष्क वनों की पारिस्थितिकी, स्थानीय जैव विविधता और वन-आधारित आजीविका का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। अनेक आदिवासी और ग्रामीण समुदायों के लिए यह केवल आय का स्रोत नहीं, बल्कि सांस्कृतिक परंपराओं, स्थानीय ज्ञान और खाद्य सुरक्षा से भी जुड़ा हुआ वृक्ष है। इसलिए महुआ का संरक्षण केवल एक प्रजाति को बचाने का प्रयास नहीं, बल्कि उससे जुड़े पूरे सामाजिक और पारिस्थितिकी तंत्र को सुरक्षित रखने का सवाल है।

क्षेत्रीय सर्वेक्षणों में यह बात सामने आई है कि महुआ के पुराने पेड़ तो अब भी दिख जाते हैं, लेकिन नए पौधे लगभग नदारद हैं। अनेक क्षेत्रों में मौजूद ये परिपक्व वृक्ष अपनी प्राकृतिक आयु के अंतिम चरणों में पहुंच चुके हैं, जबकि उनका प्राकृतिक पुनरुत्पादन सीमित रह गया है। कई बीजारोपण सफल नहीं हो पाते और लंबी शुष्क अवधियों, भूमि-विघटन, अत्यधिक चराई तथा मिट्टी के सख्त होने के कारण पौधे मुरझा जाते हैं। यहां तक कि फूल बीनने के दौरान साफ-साफ के लिए लगाई गई मौसमी आग भी, यदि नियंत्रित न हो, तो बीजों के फैलाव और नए पौधों के स्थापित होने में बाधा बनती है। परिणामस्वरूप, पुराने महुआ वृक्ष तो अब भी घने छायों के साथ खड़े दिखाई देते हैं, लेकिन उनकी जगह लेने वाली नई पीढ़ी पर्याप्त संख्या में विकसित नहीं हो पा रही।

महुआ एक कठोर प्रजाति का वृक्ष है, जो गर्मी और सूखे का सामना कर सकती है, लेकिन अब वर्षा में जो बदलाव आ रहे हैं, वे इस पर भारी पड़ रहे हैं। ग्रामीणों का अनुभव है कि महुआ के फूलों का मौसम अब पहले जैसा अनुमानित नहीं रहा। देरी से पड़ने वाली सर्दियों की बारिश और लंबी



सूखा अवधियों ने फूलों को या तो कम कर दिया है या फिर उनके खिलने का समय ही बदल गया है। नतीजतन, फूल बीनने वाले परिवारों के लिए यह मौसम पहले जितना भरोसेमंद नहीं रह गया है।

यह दबाव केवल जंगलों तक सीमित नहीं है। ‘नेचर सरस्टेनेबिलिटी’ में प्रकृति में महुआ एक कठोर प्रजाति का वृक्ष है, जो गर्मी और सूखे का सामना कर सकती है, लेकिन अब वर्षा में जो बदलाव आ रहे हैं, वे इस पर भारी पड़ रहे हैं। ग्रामीण बताते हैं कि महुआ के फूलों का मौसम अब पहले जैसा अनुमानित नहीं रहा। देरी से पड़ने वाली सर्दियों की बारिश और लंबी सूखा अवधियों ने फूलों को या तो कम कर दिया है या फिर उनके खिलने का समय ही बदल गया है। नतीजतन, फूल बीनने वाले परिवारों के लिए यह मौसम पहले जितना भरोसेमंद नहीं रह गया है। यह दबाव केवल जंगलों तक सीमित नहीं है। ‘नेचर सरस्टेनेबिलिटी’ में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार, भारत के कृषि परिदृश्यों में बड़े पेड़ों में गिरावट दर्ज की गई है।

प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार, भारत के कृषि परिदृश्यों में बिखरे हुए बड़े पेड़ों में गिरावट दर्ज की गई है। अध्ययन में पाया गया कि वर्ष 2010-11 में

किसी देश को इससे नहीं परखना चाहिए कि वह अपने समर्थ उच्च वर्ग के नागरिकों के साथ कैसा व्यवहार करता है, बल्कि इससे कि वह निम्न वर्ग के नागरिकों से कैसा बर्ताव करता है।

– नेल्सन मंडेला

मौजूद बड़े कृषि-वृक्षों में लगभग 11.2 फीसद वृक्ष 2018 तक गायब हो चुके थे। इसके बाद 2018 से 2022 के बीच 50 लाख से अधिक बड़े वृक्ष और लुप्त हो गए। इसे शोधकर्ताओं ने बदलती कृषि पद्धतियों से जोड़ कर देखा है। ग्रामीण विकास के तहत सड़कों के चौड़ीकरण के दौरान महुआ के सैकड़ों पुराने पेड़ उखाड़ दिए गए, जो दशकों से ग्रामीण सड़कों की शोभा बढ़ा रहे थे।

इससे भी चिंताजनक सांस्कृतिक अंतराल है। एक समय था जब गांव के चौपालों, चरागाहों और खेतों की मेड़ों पर महुआ के पेड़ दिखाई देते थे। इसकी पत्तियों से पत्तल बनाई जाती थी, जो सामुदायिक भोज और शदियों का अभिन्न हिस्सा थीं। मगर अब प्लास्टिक की प्लेटें ने पत्तलों की जगह ले ली है, जिससे एक ओर आजीविका प्रभावित हुई है, तो दूसरी ओर महुआ की सांस्कृतिक पहचान भी फीकी पड़ गई है। बुजुर्ग अब भी याद करते हैं कि कैसे एक पीढ़ी पहले खेतों के किनारे महुआ के वृक्षों की कतारें होती थीं, जो अब नजर नहीं आती।

कुछ राज्यों में संगठित खरीद और मूल्य-वर्धन योजनाओं से महुआ संग्रह करने वालों को लाभ तो हुआ है, लेकिन प्रसंस्करण और बाजार तक सीमित पहुंच के कारण इसकी आर्थिक क्षमता का पूरा लाभ स्थानीय समुदायों तक नहीं पहुंच पाया है। क्षेत्रीय अनुभव बताते हैं कि बहुत से सरल उपयोग महुआ के संरक्षण में मदद कर सकते हैं। उन क्षेत्रों में नियमित निरीक्षण जहां यह प्रजाति आम है, साथ ही पेड़ों की आयु संरचना और बीजों की जीवित रहने की दर पर नजर रखना आवश्यक है। गांव के स्तर पर, फूल बीनने के मौसम में जमीन पर आग लगाने पर नियंत्रण जरूरी है। इससे विशेष रूप से मानसून के शुरुआती महीनों में जब नए पौधे निकलते हैं, तब इनके जीवित रहने की दर में उल्लेखनीय सुधार हो सकता है।

सबसे अहम है सामुदायिक भागीदारी। जब लोगों को समझाया जाता है कि पौधों की रक्षा कराना क्यों जरूरी है, तो वे इसे अपना लेते हैं। लेकिन, दुर्भाग्य से आज के पौधरोपण अभियानों में अक्सर तेजी से बढ़ने वाली या फल देने वाली प्रजातियों को प्राथमिकता दी जाती है। महुआ के पौधे शायद ही मांगे जाते हैं, जिससे स्थानीय नर्सरियों में इनकी उपलब्धता न के बराबर हो जाती है। दो मत नहीं कि सरकारी नर्सरियों में महुआ को प्राथमिकता देने की आवश्यकता है।

महुआ के क्षरण के पीछे कोई एक कारण जिम्मेदार नहीं है। जलवायु परिवर्तन से फूल आने के समय में बदलाव, अत्यधिक चराई, अनियंत्रित मौसमी आग, भूमि-विघटन, सड़क चौड़ीकरण, कृषि पद्धतियों में परिवर्तन तथा महुआ पौधों के सीमित रोपण जैसे अनेक कारक मिल कर इसकी नई पीढ़ी को कमजोर कर रहे हैं। सहायक प्राकृतिक पुनरुद्धार, क्षीण हिस्सों में संवर्धन रोपण और कृषि-वानिकी प्रणालियों में महुआ को शामिल करने से मौजूदा पेड़ों पर दबाव कम किया जा सकता है। उत्तर प्रदेश में सौ वर्ष से अधिक पुराने विरासत वृक्षों के रखरखाव की जो पहल शुरू हुई है, वह वास्तव में महुआ संरक्षण के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण है।

पारिस्थितिकीय गिरावट कभी नाटकीय रूप से नहीं होती। पेड़ अचानक नहीं मिटते। वे धीरे-धीरे ढल जाते हैं, जब उनकी अगली पीढ़ी लड़खड़ाने लगती है। इसलिए महुआ के भविष्य की सुरक्षा न केवल एक पारिस्थितिकीय चुनौती है, बल्कि आजीविका का सवाल भी है। यदि समय रहते निगरानी, सामुदायिक सहयोग और संस्थागत समर्थन मिल जाए, तो यह अनमोल वृक्ष भारत के सुखे जंगलों में फिर से पनप सकता है।

पारदर्शिता की खातिर

लो

कतंत्र की सफलता केवल मतदान कराने से सुनिश्चित नहीं होती, बल्कि इस बात से तय होती है कि मतदान प्रक्रिया कितनी स्वतंत्र, निष्पक्ष और पारदर्शी है। इस पूरी व्यवस्था की सबसे अहम कड़ी है जुटेरहित मतदाता सूची। यदि मतदाता सूची में फजी नाम शामिल हों या पात्र नागरिकों के नाम छूट जाएं, तो चुनाव की निष्पक्षता पर स्वाभाविक रूप से प्रश्नचिह्न लगते हैं। यही वजह है कि चुनाव आयोग समय-समय पर विशेष गहन पुनरीक्षण की प्रक्रिया अपनाता है। इसका उद्देश्य किसी राजनीतिक दल को लाभ या हानि पहुंचाना नहीं, बल्कि मतदाता सूची को अधिक शुद्ध और अद्यतन बनाना है। यह प्रक्रिया नई नहीं है। विभिन्न राज्यों में पहले ही समय-समय पर ऐसे पुनरीक्षण होते रहे हैं। इसके दिनों में एसआइआर को लेकर राजनीतिक विवाद तेज हुआ है। लोकतंत्र में किसी भी संवैधानिक प्रक्रिया पर सवाल उठाना विपक्ष का अधिकार है, बशर्ते उसके समर्थन में ठोस तथ्य और प्रमाण प्रस्तुत किए जाएं। स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव किसी एक दल की नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र की आवश्यकता है। मतदाता सूची का शुद्धिकरण लोकतांत्रिक व्यवस्था का अनिवार्य अंग है।

– *बुगल किशोर राही, छपरा*

बारिश और तबाही

देश के विभिन्न हिस्सों में भारी बारिश के कारण जनजीवन अस्त-व्यस्त होने के साथ उसका भयावह रूप लोगों में दहशत पैदा कर रहा है। चाहे महाराष्ट्र हो या केरल, राजस्थान हो या गुजरात, मध्यप्रदेश हो या उत्तराखंड हर जगह पानी ने तबाही मचा दी है। गत वर्ष भारी बारिश के कारण राजस्थान के झालावाड़ जिले में स्कूल की छत गिरने से सात बच्चों की दब कर मौत हो गई थी। इसी तरह कई स्थानों पर ऐसी घटनाएं हुई थीं। इस बार भी स्कूल और

अन्य विभागों को सतर्क हो जाना चाहिए, ताकि बारिश से झालावाड़ जैसी घटना की पुनरावृत्ति न हो। सभी राज्यों के विभाग प्रमुख व सभी स्कूलों के प्रधानाध्यापक अपनी जिम्मेदारी समझते हुए ऐसे भवन जो जर्जर हैं तथा छतें कमजोर व खतरनाक स्थिति में हों, तो तत्काल अपने विभाग को सूचना दे और ऐसे सुरक्षित भवनों में बच्चों को पढ़ाएं, जहां कोई खतरा न हो। बचाव ही समझदारी है। नुकसान होने के बाद कार्रवाई का कोई फायदा नहीं होता।

– *हेमा हरि उपाध्याय, ‘अक्षत’, उज्जैन*

गलत राह पर

किसी भी देश का भविष्य वहां की आने वाली पीढ़ियों पर निर्भर होता है। ऐसे में अगर नाबालिगों के कदम अपराधिक दुनिया में बढ़ते हैं, तो सवाल है देश का भविष्य आखिर किसी ओर जाएगा? जिस उम्र में उन्हें पढ़ाई करनी चाहिए और जिस समय बच्चों की मानसिक स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव डाला है। व्यस्तता के कारण माता-पिता बच्चों पर पूरी निगरानी नहीं रख पा रहे हैं। इसलिए हर एक घर में इस बात का ध्यान रखना जरूरी है।

– *आलोक यादव, प्रयागराज*

वक्त का तकाजा

‘शुचिता की राह’ (संपादकीय, 3 जुलाई) पढ़ा। यह विचारोत्तेजक है। स्वस्थ लोकतंत्र निरंतर संवाद, प्रश्न, बहस और जवाबदेही की सशक्त परंपरा से संचालित होता है। सरकार से जनहित के मुद्दों पर सार्थक प्रश्न पूछना तथा उनके उत्तर को सार्वजनिक विमर्श का हिस्सा बनाना लोकतंत्र की शक्ति का परिचायक है। यह प्रक्रिया न केवल शासन को अधिक उत्तरदायी बनाती है, बल्कि नागरिकों के विश्वास की भी सुदृढ़ करती है। साथ ही, विभिन्न संस्थाओं और एजेंसियों की भूमिका भी लोकतांत्रिक कसौटी पर परखी जानी चाहिए। उनकी निष्पक्षता, पारदर्शिता और संवैधानिक दायित्वों के प्रति प्रतिबद्धता ही लोकतंत्र की विश्वसनीयता को बनाए रख सकती है। इस मुद्दे पर लोगों को जागरूक रहने के साथ-साथ लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति भी सजग करने की जरूरत है। वक्ता का यही तकाजा है।

– *अशोक, पटना, बिहार*

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

मानवीय गुणों से एआई का रखें तालमेल

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) तेजी से कार्यस्थलों का स्वरूप बदल रही है। रिपोर्ट लिखने से लेकर कोड तैयार करने और डाटा विश्लेषण जैसे कई काम अब

मशीनें कर रही हैं। ऐसे में सवाल यह है कि इंसानों की सबसे बड़ी ताकत क्या होगी? जवाब उन मानवीय क्षमताओं में छिपा है, जो एआई के लिए अभी भी चुनौती

बनी हुई हैं। बदलते रोजगार बाजार में तकनीकी दक्षता के साथ कौन-से मानवीय गुण युवाओं को आगे रखेंगे और कैसे? बता रहे हैं **ऋषभ मिश्रा**



जॉब/करियर

■ बिहार स्टेट यूनिवर्सिटी सर्विस कमीशन ने बिहार के विभिन्न विश्वविद्यालयों में अस्सिस्टेंट प्रोफेसर की भर्ती के लिए आवेदन मांगे हैं।

कुल पद : 3687

अंतिम तिथि : 15 जुलाई 2026

आवेदन प्रक्रिया : ऑनलाइन करें। वेबसाइट - **bsusc.bihar.gov.in**

■ इंस्टीट्यूट ऑफ बैंकिंग पर्सनल सिलेक्शन ने विभिन्न सार्वजनिक बैंकों में प्रोबेशनरी ऑफिसर/ मैनेजमेंट ट्रेनी के पदों पर भर्ती के लिए अधिसूचना जारी की है।

कुल पद : 6715

अंतिम तिथि : 21 जुलाई 2026

आवेदन प्रक्रिया : देखें वेबसाइट : **ibps.in**

■ जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में गैर-शिक्षण पदों पर भर्तियां की जाएंगी। इसके तहत अस्सिस्टेंट लाइब्रेरियन, क्यूरेटर आदि पद भरे जाएंगे। आवेदन ऑनलाइन करना होगा।

कुल पद : 267

अंतिम तिथि : 27 जुलाई 2026

आवेदन प्रक्रिया : वेबसाइट है - **jnu.ac.in**

■ उत्तर प्रदेश में जनपद फर्रुखाबाद के शहरी एवं ग्रामीण परिक्षेत्रों में आगनवाड़ी कार्यक्रमियों के पद रिक्त हैं। महिला अग्रयणी ही आवेदन की पात्र होंगी।

कुल पद : 292

अंतिम तिथि : 20 जुलाई 2026

आवेदन प्रक्रिया : इस वेबसाइट **upanganwadibharti.in** पर जाएं।

■ जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी (बीएसए), अलीगढ़ के अंतर्गत संचालित कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों में प्रवधानाचार्या, पीजीटी, कपरासी समेत अन्य पदों पर रिक्तियां हैं।

कुल पद : 122

अंतिम तिथि : 20 जुलाई 2026

आवेदन प्रक्रिया : डाक द्वारा। वेबसाइट है - **aligarh.nic.in**

■ संघ लोक सेवा आयोग ने भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और विभागों में ग्रुप 'ए' और ग्रुप 'बी' के पदों पर रिक्तियां निकाली हैं।

कुल पद : 450

अंतिम तिथि : 17 जुलाई 2026

आवेदन प्रक्रिया : ऑनलाइन। वेबसाइट है - **upsc.gov.in**

■ बैंक ऑफ इंडिया में क्रेडिट अफसरों की नियुक्ति के लिए ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया जारी है।

कुल पद : 779

अंतिम तिथि : 20 जुलाई 2026

आवेदन प्रक्रिया : **bankofindia.bank.in** के करियर सेक्शन में देखें।

■ इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड ने बरोनी रिफाइनरी यूनिट में ऑपरेटर की रिक्तियां भरने के लिए ऑनलाइन आवेदन मांगे हैं।

कुल पद : 432

आवेदन प्रक्रिया : वेबसाइट है - **iocl.com**

(नोट : आवेदन करने से पहले आधिकारिक वेबसाइट से अपने स्तर पर जांच कर लें)

मेजें अपना सवाल

करियर या शैक्षिक कोर्स संबंधी आपके मन में कोई उलझन है या कोई जानकारी चाहते हैं, तो आप हमें अपने सवाल नीचे दी गई ईमेल पर भेज सकते हैं। हमारे विशेषज्ञ उसके जवाब देंगे। इस ईमेल आईडी का उपयोग करें **nayirahincareer@gmail.com**

विश्व आर्थिक मंच की 'फ्यूचर ऑफ जॉब्स रिपोर्ट 2025' के अनुसार, वर्ष 2030 तक दुनिया में लगभग 17 करोड़ नई नौकरियां पैदा होंगी, जबकि करीब 9.2 करोड़ नौकरियां एआई से आए तकनीकी परिवर्तन के कारण समाप्त या बदल जाएंगी। रिपोर्ट के अनुसार 2030 तक नौकरी के लिए जरूरी कौशलों का लगभग 39 प्रतिशत हिस्सा बदल जाएगा।

ऐसे में केवल तकनीकी दक्षता पर्याप्त नहीं होगी। रचनात्मक सोच, नेतृत्व एवं सामाजिक प्रभाव, लचीलापन और लगातार सीखते रहने जैसी क्षमताओं का महत्व तेजी से बढ़ेगा। रिपोर्ट बताती है कि लगभग 70 प्रतिशत नियोक्ता विश्लेषणात्मक सोच को सबसे अहम कौशल मानते हैं। यानी भविष्य में केवल जानकारी जुटाना नहीं, बल्कि उसे समझना, परखना और उसके आधार पर सही निर्णय लेना ही दूसरों से अलग बनाएगा।

अहम हुए मानवीय कौशल

हार्वर्ड बिजनेस स्कूल और बोस्टन कंसल्टिंग ग्रुप के एक अध्ययन में पाया गया कि केवल एआई पर निर्भर रहने से काम में गलतियों की संभावना बढ़ जाती है। वहीं, जिन कर्मचारियों ने एआई के साथ क्रिटिकल थिंकिंग, समस्या-समाधान क्षमता और रचनात्मकता जैसे मानवीय कौशलों का भी इस्तेमाल किया, उनके काम की गुणवत्ता में करीब 40 फीसदी तक सुधार देखा गया।

माइक्रोसॉफ्ट-लिंग्कडइन (वर्क ट्रेंड इंडेक्स) की संयुक्त रिसर्च रिपोर्ट के अनुसार, आज कॉर्पोरेट जगत में 'एआई एटीट्यूड' की मांग बढ़ रही है। इसमें एआई का ज्ञान और उसे प्रभावी ढंग से लागू करने की सॉफ्ट स्किल्स शामिल हैं। 71 फीसदी प्रबंधक ऐसे उम्मीदवारों को प्राथमिकता देते हैं, जो एआई के साथ सीखने, बदलाव अपनाने और बदलाव लाने की क्षमता रखते हैं, भले ही उनका तकनीकी अनुभव अपेक्षकृत कम हो।

85%

के लगभग सफलता संवाद कौशल, टीमवर्क, नेतृत्व जैसे व्यावहारिक कौशल पर निर्भर करती है, एक अध्ययन के अनुसार। 89% नियोक्ता मानते हैं कि असफल नियुक्तियों की बड़ी वजह सॉफ्ट स्किल्स की कमी भी होती है।



5 आदतें, जो रखेंगी एआई के दौर में आगे

1. काम को शुरू करने से पहले यह सोचना कि इसका कौन सा हिस्सा एआई से तेजी से और बेहतर कराया जा सकता है।
2. एआई से मिले जवाबों, डेटा व तथ्यों की दोबारा जांच करना भी बेहद जरूरी है।
3. नए एआई टूल्स और फीचर्स को लगातार सीखते रहे और उन्हें आजमाने रहना भी जरूरी।
4. अपने सुझावों से एआई के समाधानों को तब तक बेहतर करें, जब तक इच्छित नतीजा न मिले।
5. गोपनीय और संवेदनशील डेटा इंगुट न करने की आदत बनाएं।

इंडस्ट्री के दिग्गज क्या मानते हैं

एनविडिया के सीओ जेनसन हुआंग का कहना है कि छात्रों और पेशेवरों को यह चिंता नहीं करनी चाहिए कि कौन-सा विषय या करियर एआई से सुरक्षित रहेगा, बल्कि उन्हें यह सीखना चाहिए कि एआई उनके सीखने, काम व कौशल को कैसे बेहतर बना सकती है। रचनात्मक सोच, प्रभावी संवाद जैसी मानवीय क्षमताएं भविष्य में भी अहम रहेंगी। भविष्य उनका होगा, जो एआई का प्रभावी उपयोग करना सीखेंगे।

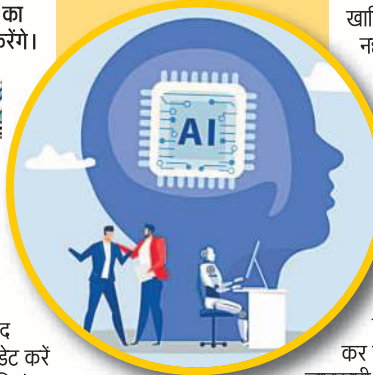
माइक्रोसॉफ्ट के सीईओ सत्या नडेला का मानना है कि एआई के दौर में केवल आईव्यू या तकनीकी दक्षता सफलता की गारंटी नहीं है। उनके अनुसार, सहानुभूति और भावनात्मक बुद्धिमत्ता ऐसे मानवीय गुण हैं, जो लोगों को बेहतर नेतृत्व, प्रभावी संवाद और मजबूत टीमवर्क में सक्षम बनाते हैं। इसलिए भविष्य में सबसे आगे वही पेशेवर रहेंगे, जो तकनीकी कौशल के साथ इन क्षमताओं को भी विकसित करेंगे।

एआई के कारण पेशेवर कामकाज में जरूरी कौशल तेजी से बदल रहे हैं। तकनीक तो अब सभी के पास है, ऐसे में सफलता उन्हीं को मिलेगी, जो मानवीय कौशल का बेहतर उपयोग करेंगे।



सीखते रहना तकनीक तेजी से बदल रही है, इसलिए किसी एक डिग्री या कौशल के भरोसे न रहें। खुद को लगातार अपडेट करें और नई जानकारीयां व क्षमताएं विकसित करते रहें।

बेहतर नतीजों के लिए निखारें ये मानवीय कौशल



भावनात्मक बुद्धिमत्ता लोगों की जरूरतों और भावनाओं को समझना अभी भी इंसानों की खासियत है, एआई की नहीं। इसलिए नेतृत्व, टीमवर्क और

दूसरों को प्रेरित करने जैसे गुणों का महत्व और भी बढ़ेगा।



क्रिटिकल थिंकिंग तथ्यों का परीक्षण कर सही और गलत जानकारी में अंतर करना तथा तार्किक निर्णय लेने की क्षमता बढ़ाएं।



रचनात्मकता नए विचार विकसित करें, क्योंकि मौलिक सोच ही भविष्य में सबसे अधिक मूल्यवान होगी। विज्ञापन, डिजाइन, कंटेंट क्रिएशन और उद्यमिता में यही सबसे बड़ी पूंजी है।



डिजिटल साक्षरता एआई और अन्य डिजिटल उपकरणों का सुरक्षित, जिम्मेदारी के साथ और प्रभावी उपयोग करना सीखें। आज सभी डिजिटल तकनीक का उपयोग कर रहे हैं।



संवाद कौशल एआई के बावजूद स्पष्ट संवाद, बेहतर टीमवर्क और नेतृत्व की क्षमता हर पेशे में अहम है। खासकर लोगों से जुड़े कामों में, जैसे प्रोजेक्ट मैनेजर, वकील आदि।



बदलाव अपनाने नई तकनीकी, कार्यशैली और बदलती परिस्थितियों के अनुरूप खुद को तेजी से ढालें। मैनुफैक्चरिंग और आईटी जैसे क्षेत्रों में यह क्षमता बेहद जरूरी है।



उद्यमशील सोच नए अवसरों की पहचान करें। एआई की मदद से कम लागत में नए विचारों को कारोबार में बदलना पहले से कहीं आसान हो गया है।



आत्म-प्रेरणा पहल करने, नई चीजें अपनाने और चुनौतियों के बावजूद अपने लक्ष्य पर डट रहने की क्षमता विकसित करें। बदलते कार्यक्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन के लिए यह गुण अहम है।

यूपीएससी आपकी सोच को परखेगा

एक्सपर्ट टिप्स

डॉ. संजीव कुमार आचार्य
सीनियर करियर काउंसलर



■ मैं बीएससी कर रही हूँ। यूपीएससी की तैयारी कर आईएसएस बनना चाहती हूँ, लेकिन मेरी आवाज स्पष्ट नहीं है और मैं रुक-रुक कर बोलती हूँ। इस वजह से स्पीच थेरेपी भी ले रही हूँ। ऐसे में मुझे यूपीएससी इंटरव्यू में कोई परेशानी तो नहीं आएगी? कृपया मेरा मार्गदर्शन करें।

- आराध्या भटनागर

बोलने में कठिनाई होने पर निराश होने या आईएसएस बनने का सपना छोड़ने की जरूरत नहीं है। यूपीएससी का पर्सनैलिटी टेस्ट भाषण देने या संवाद कला की प्रतियोगिता नहीं है। यह परीक्षा यह परखती है कि उम्मीदवार में सार्वजनिक सेवा के लिए जरूरी गुण हैं या नहीं। इसमें उसकी समझ, ईमानदारी, सही फैसले लेने की क्षमता, तार्किक सोच, स्पष्ट विचार, सामान्य जागरूकता और दबाव में शांत रहकर संतुलित निर्णय लेने की योग्यता का आकलन किया जाता है।

स्पीच थेरेपी शुरू करना आपका सही फैसला है। नियमित अभ्यास से अधिकांश लोगों को बोलने में काफी सुधार आता है और उनका आत्मविश्वास भी बढ़ता है। यूपीएससी के पर्सनैलिटी टेस्ट (इंटरव्यू) में बोर्ड उम्मीदवार को अपनी बात रखने के लिए पूरा समय देता है। इस बात पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है कि आप क्या कहते हैं, न कि कितनी तेजी या कितनी अच्छी

तरह बोलते हैं।

स्पीच थेरेपी के साथ रोज कम-से-कम 5 मिनट अखबार जोर से पढ़ें, ग्रुप डिस्कशन में हिस्सा लें, अपनी आवाज रिकॉर्ड करके सुनें और मॉक इंटरव्यू का अभ्यास करें। इससे धीरे-धीरे झिझक कम होगी, आत्मविश्वास बढ़ेगा और अपनी बात बेहतर ढंग से रख पाएंगे। फिलहाल अपना पूरा ध्यान बी.एससी. की पढ़ाई पर रखें। साथ ही, यूपीएससी की तैयारी के लिए कंटेंट अफेयर्स, सामान्य अध्ययन और उत्तर लेखन का अभ्यास करते रहें। याद रखें, इंटरव्यू में आपकी आवाज से ज्यादा आपका ज्ञान, ईमानदारी और आत्मविश्वास मायने रखता है।

■ संस्कृत से प्रेजुएशन करने के बाद किन क्षेत्रों में करियर बनाना या आपकी सलाह क्या है?

- वैष्णवी दुबे

संस्कृत में स्नातक करने के बाद बी.एड. तथा सीटीईटी या राज्य टीईटी जैसी परीक्षाएं पास करके स्कूल शिक्षक बना जा सकता है। वहीं, एम.ए., एम.फिल. या पीएचडी करने पर कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में अध्यापन तथा शोध के अवसर मिलते हैं। पुरातत्व, शिलालेख अध्ययन, संग्रहालय और भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़े शोध कार्यों में भी अच्छे अवसर उपलब्ध हैं।



(sanjibacharya.com)



पं. राघवेंद्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

■ **मेघ** : मन प्रसन्न रहेगा। माता का सान्निध्य मिलेगा। कारोबार कार्यों के लिए यात्रा पर जा सकते हैं। किसी मित्र का सहयोग भी मिल सकता है। आय में वृद्धि होगी।

■ **वृष** : मन अशांत हो सकता है। धैर्यशीलता बनाए रखें। कारोबार के विस्तार के लिए माता-पिता से धन मिल सकता है। किसी पुराने मित्र से भेंट हो सकती है।

■ **मिथुन** : मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। जीवनसाथी की सहेत का ध्यान रखें। कारोबार में बदलाव के योग बन रहे हैं। परिवार का साथ मिलेगा।

■ **कर्क** : धैर्यशीलता बनाए रखने का प्रयास करें। कारोबार में परिवर्तन हो सकता है। किसी मित्र का सहयोग मिल सकता है। माता-पिता से धन मिल सकता है।

■ **सिंह** : नौकरी में तरक्की के मार्ग प्रशस्त होंगे। अफसरों का सहयोग मिलेगा। आय में वृद्धि होगी, परंतु कार्यक्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है। सहेत का ध्यान रखें।

■ **कन्या** : नौकरी के लिए परीक्षा एवं साक्षात्कार आदि कार्यों में सफलता मिलेगी। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। आय में वृद्धि होगी। वरुण पर खर्च बढ़ सकते हैं।

■ **तुला** : मन अशांत हो सकता है। परिवार की सहेत का ध्यान रखें। पिता का साथ मिलेगा। कारोबार में वृद्धि होगी। लाम के अवसर मिलेंगे। परिश्रम अधिक रहेगा।

■ **वृश्चिक** : शैक्षिक व शोध आदि कार्यों में सफलता मिलेगी। नौकरी में बदलाव के साथ किसी दूसरे स्थान पर जा सकते हैं। वाहन सुख में वृद्धि हो सकती है।

■ **धनु** : मन प्रसन्न रहेगा, परंतु फिर भी धैर्यशीलता बनाए रखें। नौकरी में तरक्की के अवसर मिल सकते हैं, परंतु स्थान परिवर्तन हो सकता है। खर्च बढ़ेंगे।

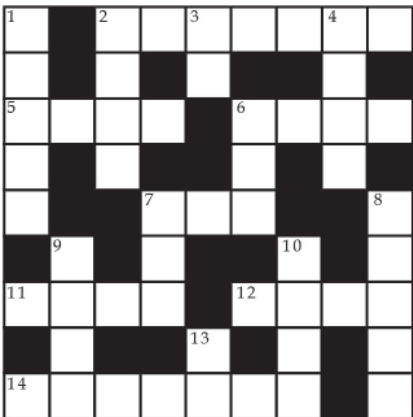
■ **मकर** : संयत रहें। क्रोध व बहस से बचने में ही मार्गदर्श होगी। नौकरी में कार्यभार में वृद्धि हो सकती है। यात्रा पर भी जाना पड़ सकता है। पिता की सहेत का ध्यान रखें।

■ **कुंभ** : नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा। तरक्की के अवसर मिलेंगे। कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी। भवन सुख में वृद्धि हो सकती है। पिता का साथ मिलेगा।

■ **मीन** : वाणी में मधुरता रहेगी। नौकरी में कार्यक्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है। परिश्रम अधिक रहेगा। अपनी और परिवार की सहेत का ध्यान रखें। खर्चों में भी वृद्धि होगी।

रोजनामचा

वर्ग पहली : 8384



- बाएं से दाएं
2. दोष लगाना; निंदा करना; बुराई करना; लांछन लगाना (4,3)
 5. बुरा लगाना; खलना; डर लगाना; झगड़ा होना (4)
 6. अंदर की ओर दबा हुआ; काना पर मोटा अंदर से पतला; नीचे तल वाला (4)
 7. काल संबंधी; गलीचा (3)
 11. सुंदरी; मन को लुभाने वाली; गोरोचना (4)
 12. किसी के पूरे शरीर को खुले जल से तर करना; स्नान कराना (4)
 14. बेसुध होकर सोना; लौटकर ना आना; कर्तव्य को सुध न लेना (4,1,2)
- ऊपर से नीचे
1. मगज पच्ची करना; माथा पच्ची करना; सिर खपाना (2,3)
 2. भटकना; पथभ्रष्ट होना; चूकना; आपे में न रहना

- (4)
3. महिला; स्त्री (2)
 4. पृथ्वी के नीचे; पाताल में छटा लोक (4)
 6. सुख; चैन; आराम; शांति (3)
 7. अंधकार; कालापन; कालिख; कलंक; दोष; लांछन (3)
 8. जिसका वर्णन न किया जा सके (5)
 9. मन को हरने वाला; मनहस; सुंदर (4)
 10. संदेशा भेजना; पुकारा जाना; कहलाया जाना (4)
 13. अर्थ; लौतक; द्रव्य; नकदी; रुपया-पैसा; संपत्ति (2)
- हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली (उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहली : 8383



सुडोकू : 8338

*आसान

8	2			7	4
	5				
9			2	5	3
		7	1	8	2
		5	9	6	4
6			5	3	
	3			1	6
5	9				1
					8

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहली है यह। ऊपर नीचे-नीचे खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएँ। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहली का हल हम कल देंगे।

सुडोकू : 8337

2	6	8	7	3	1	9	5	4
7	5	4	2	9	8	3	1	6
9	3	1	4	6	5	8	7	2
5	9	6	1	4	3	2	8	7
3	4	7	5	8	2	1	6	9
8	1	2	9	7	6	5	4	3
4	2	9	8	5	7	6	3	1
6	7	5	3	1	9	4	2	8
1	8	3	6	2	4	7	9	5

